



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 3  
PART III—Section 3

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 2]

नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 23, 1983/पौष 2, 1905

No. 2]

NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 23, 1983/PAUSA 2, 1905

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate  
compilation

दादरा और नागर हवेली संघ राज्यक्षेत्र प्रशासन

अधिसूचना

सितम्बर, 23 दिसम्बर, 1983

सं० प्र०/विधि/सीएमटी/83 :-दादरा और नागर हवेली के प्रशासक  
केन्द्रीय विनियम कर अधिनियम 1956 (1956 का केन्द्रीय अधिनियम  
74) की धारा 13 की उपधारा (3), (4) और (5) द्वारा प्रदत्त  
शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित नियम बनाते हैं :-

1. संक्षिप्त नाम बिस्तार और प्रारम्भ :-

(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम केन्द्रीय विनियम कर (दादरा  
और नागर हवेली) नियम 1983 है।

(2) इनका बिस्तार संपूर्ण दादरा और नागर हवेली संघ राज्य  
क्षेत्र पर है।

(3) ये नियम राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं :-इन नियमों में जब तक कि विषय या संबंध  
से अन्यथा विद्वान न हों:-

(क) "अधिनियम" से केन्द्रीय विनियम कर अधिनियम 1956  
[1956 का केन्द्रीय अधिनियम (4)] अभिप्रेत है;

(ख) "केन्द्रीय नियम" से केन्द्रीय विनियम कर (रजिस्ट्रार  
और आबर्ल) नियम 1957 अभिप्रेत है;

(ग) "विक्रय कर आयुक्त" से दादरा और नागर हवेली विनियम  
कर विनियम 1978 (1978 का 2) के अर्थात् इस  
पदाभिधान से नियुक्त अधिकारी अभिप्रेत है;

(घ) "प्रकरण" से प्रकरण 1 प्रकरण 2 प्रकरण 3 प्रकरण 4 प्रकरण 5  
प्रकरण 6 प्रकरण 7 प्रकरण 8 प्रकरण 9 और प्रकरण 10 को  
छोड़कर जो इन नियमों से संबन्धित हैं केन्द्रीय नियमों से  
संबन्धित कोई प्रकरण अभिप्रेत है;

(ङ) "संयुक्त कारागार अधिकारी" से-

(i) किसी विशेष व्योहारी के या उस व्यक्ति के संबंध में  
जिसे माल अस्तित्व किया जा रहा है वह विनियम कर  
अधिकारी या सहायक विनियम कर अधिकारी अभिप्रेत  
है जिसकी अधिकारिता के अन्तर्गत ऐसे व्योहारी या  
माल के अस्तित्व के कारण का स्थान अवस्थित  
है;

(ii) ऐसे व्योहारी के या उस व्यक्ति के संबंध में जिसे  
माल अस्तित्व किया जा रहा है जिसके दादरा और  
नागर हवेली संघ राज्यक्षेत्र में माल से अधिक कारबार  
के स्थान हैं वह विनियम कर अधिकारी या सहायक  
विनियम कर अधिकारी अभिप्रेत है जिसकी अधिकारिता  
में ऐसे कारबार का मुख्यालय अवस्थित है;

(iii) ऐसे व्योहारी के या उस व्यक्ति के संबंध में जिसे  
माल अस्तित्व किया जा रहा है और जिसके कारबार

का दावरा और नागर हवेली संघ राज्यक्षेत्र में कोई स्थान नहीं है किन्तु उस राज्यक्षेत्र से माल का विक्रय करता है या जिसे उग राज्यक्षेत्र में माल प्रेषित किया जाता है वह विक्रय कर अधिकारी अधिप्रेत है जो विक्रय कर आयुक्त द्वारा दावरा और नागर हवेली विक्रय कर नियम, 1983 के अधीन राज्यक्षेत्र न बाह्य व्योहारी के लिए विनिर्दिष्ट रूप से नाम निर्दिष्ट किया जाता है।

स्पष्टीकरण :—“इस खंड में आने वाले “अधिकारिता” शब्द का वही अर्थ होगा जो दावरा और नागर हवेली विक्रय कर नियम, 1983 के नियम 62 में उसका है।

3. लेखा :—(1) अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत प्रत्येक व्योहारी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार या वाणिज्य के अनुक्रम में उसके द्वारा किए गए क्रय और विक्रय का मन्चा और टोक लेखा रखेगा और उसे बनाए रखेगा जिसमें प्रत्येक संश्लेषण के आबत निम्नलिखित विनिर्दिष्टों दंगित की जाएंगी अर्थात् :—

- (क) यथास्थिति केना या विक्रेता का नाम और पता;
- (ख) माल का वर्णन और परिमाण या भार;
- (ग) प्रत्येक संश्लेषण का मूल्य;
- (घ) मंगूहीत केन्द्रीय विक्रय कर की राशि यदि कोई हो;
- (ङ) प्रेषण और प्राप्त करने वाले रेल स्टेशन या स्टोपर स्टेशन या विमान बुकिंग कार्यालयों या समुद्र पत्तों अथवा सड़क परिवहन कार्यालयों के नाम;
- (च) रेल रसीद या बहन-पत्र या विमान परेषण पत्र या सड़क परिवहन बोनस का संख्याक नाराख सहित बावत संख्याक या तारीख सहित विक्रय बिल संख्याक; और
- (छ) यथास्थिति विहित घोषणा प्रकाशक या विक्रय के संबंधित प्रमाणपत्र का क्रम संख्याक;
- (ज) कोई अन्य जानकारी जो संश्लेषण के अधिनियम के अधीन कराधान के दायित्व से संबंधित है।

(2) उपनियम (1) में निर्दिष्ट लेखे जहां तक वे लागू हों प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उस माल का बावत बनाए रखे जाएंगे जिसके एक राज्य से दूसरे राज्य में आने ले जाने का दावा ऐसे माल के यथास्थित उसके कारबार के किसी अन्य स्थान या उसके अधिकारी या प्रधान को स्थानांतरण के कारण किया जाता है विक्रय के कारण नहीं। इसी प्रकार का लेखा उसके द्वारा स्थानांतरण पर प्राप्त माल का बावत बनाए रखा जाएगा।

स्पष्टीकरण :—इस उपनियम के प्रयोजनों के लिए उपनियम (1) में अस्तिविष्ट केना या विक्रेता के नाम और पते के प्रति निर्देश का यह अर्थ लगाया जाएगा कि वह यथास्थिति परेषक या परेषिनी के प्रति निर्देश है।

(3) यदि समुचित कराधान अधिकारी यह समझता है कि बनाए रखा गया लेखा पर्याप्त रूप में इतना स्पष्ट और बाधगम्य नहीं है जिससे वह व्योहारी द्वारा फाइल किए गए प्रत्यागम या किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त या प्रेषित माल की उचित रूप से जांच करने में समर्थ होता वह यथास्थिति ऐसे व्योहारी या व्यक्ति से लिखित सूचना देकर यह अपेक्षा कर सकेगा कि वह उपनियम (1) के उपबंधों के अनुसार लेखे या रजिस्टर बनाए रखे जिससे कि वे पर्याप्त रूप से स्पष्ट और बाध गम्य हों।

4. विवरणियां :—अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत प्रत्येक व्योहारी अपने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार या वाणिज्य के अनुक्रम में किए गए विःप

का प्ररूप 1 में यथागम्य उस रीति में विवरणियां प्रस्तुत करेगा जिसमें किसी रजिस्ट्रीकृत व्योहारी द्वारा दावरा और नागर हवेली विक्रय कर विनियम 1978 और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अधीन विक्रय विवरणियां प्रस्तुत की जाती हैं।

5. वह प्राधिकारी जिसमें प्ररूप “ग” में घोषणाएं प्राप्त की जा सकती हैं ऐसी घोषणाओं आदि के अभिलेख का उपयोग अभिरक्षा और अनुरक्षण :—किसी व्योहारी द्वारा अधिनियम की धारा 8 को उपधारा (4) के खंड (क) में निर्दिष्ट घोषणा तक तक वे या स्वीकृत नहीं की जाएंगी जब तक कि वह केन्द्रीय नियम के नियम 12 के उपनियम (1) में निर्दिष्ट प्ररूप “ग” में न हों और जो अमवलित और अवधिमान्य घोषित नहीं की गई हैं। प्ररूप “ग” में ऐसी घोषणाएं व्योहारी द्वारा समुचित कराधान अधिकारी से आवेदन करते प्राप्त की जाएंगी।

(2) समुचित कराधान अधिकारी उपनियम (1) के अधीन आवेदन करने वाले व्योहारी को उनकी संख्या में खाली प्ररूप में देगा जितने उसे युक्तियुक्त प्रतीत हों :

परन्तु यह कि 25 प्ररूपों की प्रत्येक पुस्तक के लिए 12.50 रु० की फीस संदेय होगी और ऐसी फीस समुचित कराधान अधिकारी द्वारा लिए गए प्ररूप प्राप्त करने के एक प्रमाणस्वरूप व्योहारी द्वारा वे जाने वाली रसीद पर व्यायालय फीस स्टॉप या स्टॉप लगाकर संदेय की जाएगी।

(3) किसी केना व्योहारी द्वारा किसी विक्रेता व्योहारी को प्ररूप “ग” में घोषणा देने से पूर्व वह घोषणा प्ररूप में सभी अपेक्षित विनिर्दिष्टों भरेगा और उक्त घोषणा में इस प्रयोजन के लिए उपबंधित स्थान पर अपने हस्ताक्षर भी करेगा। तत्पश्चात् केना व्योहारी “मूल प्रति” और “दूसरी प्रति” चिह्नित किए गए उनके दो भाग विक्रेता व्योहारी के हवाले करेगा और प्रेषित अपने पास रख लेगा जो पांच वर्ष की यादें और अधि के लिए जो पर्याप्त कारण के लिए विक्रय कर आयुक्त द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए रखी जानी चाहिए।

(4) कोई रजिस्ट्रीकृत व्योहारी जो किसी अन्य रजिस्ट्रीकृत व्योहारी को किए गए विक्रयों की बावत रियायती दर का दावा करता है वह ऐसे दावों के संबंध में प्ररूप 1 में अपनी विवरणों के साथ ऐसे विक्रयों की सूची उनका विनिर्दिष्टों देते हुए, अर्थात् बिल/किण मेंनों का क्रम संख्याक और तारीख केना का नाम और पता विक्रय कीमत की राशि मंगूहीत केन्द्रीय विक्रय कर की राशि यदि कोई है और केना से विवरणी प्रस्तुत करने के समय तक उसे किए विक्रय को बावत प्ररूप “ग” में प्राप्त घोषणा का यदि कोई है निर्देश मंगलन करेगा।

(5) अधिनियम की धारा 8 की उपधारा (1) और (4) के प्रयोजनों के लिए विक्रेता व्योहारी जिसको केना व्योहारी द्वारा उपनियम (3) के अधीन घोषणा के दो भाग दिए गए हैं उक्त घोषणा का “मूल प्रति” चिह्नित किया हुआ भाग ऐसे अधिकारी द्वारा निरीक्षण के समय तक समुचित कराधान अधिकारी को भेजेगा। वही अधिकारी अपने विवेकानुसार विक्रेता व्योहारी को भी प्ररूप “ग” में घोषणा के “दूसरी प्रति” चिह्नित किए हुए भाग को निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करने के लिए निर्देश दे सकेगा।

(6) कोई भी व्योहारी जिसे समुचित कराधान अधिकारी द्वारा प्ररूप “ग” में कोई घोषणा जारी की जाती है किसी अन्य व्यक्ति को अधिनियम की धारा 8 का उपधारा (4) के प्रमाणन के लिए हों अन्तरित करेगा अन्यथा नहीं।

(7) समुचित कराधान अधिकारी से, किसी रजिस्ट्रीकृत व्योहारी द्वारा, प्ररूप “ग” में प्राप्त प्रत्येक घोषणा उसके द्वारा अपनी सुरक्षित अभिरक्षा में रखी जाएगी और वह, ऐसे प्ररूप के खो जाने, नाश या चोरी, के लिए या ऐसे खोजाने, नाश या चोरी से प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः होने वाली सरकारी राजस्व की हानि के लिए यदि कोई है व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होगा।

(8) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्योहारी जिसे समुचित कराधान अधिकारी द्वारा प्रत्येक "ग" में कोई घोषणा जारी की जाती है, उक्त अधिकारी से प्राप्त ऐसे प्रत्येक प्रत्येक का सूचा और पूरा लेखा प्रत्येक 2 में रहेगा। यदि कोई ऐसा प्रत्येक खो जाता है, तब ही जाना है या बांग ही जाता है तो व्योहारी प्रत्येक 2 में रजिस्टर के टिप्पणियाँ स्वयं में उपयुक्त प्रविष्टि करने के मुख्य पञ्चात् उक्त तथ्य को रिपोर्ट उक्त अधिकारी को करेगा और खो जाने, नाश या चोरी को लोकपूर्वता जारी करने के लिए ऐसे कबम उठाएगा जो उक्त अधिकारी निवेश है। प्रत्येक 2 में उक्त रजिस्टर सत्यापन के लिए जैसे और जहाँ समुचित कराधान अधिकारी द्वारा अपेक्षित किया जाए, प्रस्तुत किया जाएगा।

(9) रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र के रद्दकरण पर रजिस्ट्रीकृत व्योहारी के पास स्टाम्प में प्रत्येक "ग" में अद्युक्त गोप बांगणा, यदि ऐसी घोषणाएं रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण के आवेदन के साथ प्रस्थित नहीं की गई थीं तो रद्दकरण के आवेदन को उक्त सूचना को तारीख में मान दिन के भीतर समुचित कराधान अधिकारी को अर्पित कर दी जाएगी। रजिस्ट्रीकरण के रद्दकरण का आवेदन जारी करने के पञ्चात् ऐसी घोषणाएं प्राप्त होने पर "रद्द" का शब्द चिह्नित की जाएगी।

(10) प्रत्येक "ग" में कोई घोषणा, जिसकी बाबत समुचित कराधान अधिकारी को, उपनियम (8) के अधीन कोई रिपोर्ट प्राप्त हो गई है, उपनियम (4) के प्रयोजन के लिए विधिमाल्य नहीं होगी।

(11) विक्रीय कर आयुक्त, प्रत्येक "ग" में घोषणा की विनिर्दिष्टों जिसकी बाबत उपनियम (8) के अधीन कोई रिपोर्ट प्राप्त हुई है, भारत के राजपत्र में समय-समय पर प्रकाशित करेगा।

(12) विक्रीय कर आयुक्त, अधिसूचना द्वारा यह घोषित कर सकेगा कि किसी विनिर्दिष्ट शृंखला, डिजाइन या रंग की प्रत्येक "ग" में घोषणाएं ऐसी तारीख से जो जारी की गई और भारत के राजपत्र में प्रकाशित अधिसूचना में विनिर्दिष्ट की जा सकेगी अप्रचलित और अधिविधिमाल्य समझी जाएगी।

(13) अब किसी विनिर्दिष्ट शृंखला, डिजाइन या रंग की प्रत्येक "ग" में किसी घोषणाओं को अप्रचलित और अधिविधिमाल्य घोषित करने वाली कोई अधिसूचना उपनियम 12 के अधीन प्रकाशित की जाती है तब सभी रजिस्ट्रीकृत व्योहारी, अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से सात दिन के भीतर उक्त शृंखला डिजाइन या रंग की प्रत्येक "ग" में अप्रचलित सभी घोषणाओं को जो उनके कब्जे में हों, समुचित कराधान अधिकारी को मुख्य अर्पित करेगा और उक्त बरतले प्रत्येक "ग" में ऐसी नई घोषणाएं प्राप्त करेंगे जो अप्रचलित और अधिविधिमाल्य घोषित की गई घोषणाओं के अनुकूल में हों, परन्तु यह कि प्रत्येक "ग" में नई घोषणाएं रजिस्ट्रीकृत व्योहारी को तब तक जारी नहीं की जाएंगी जब तक कि वह अपने पास पड़ी पुरानी घोषणाओं का लेखा जोखा ऐसे प्रत्येक में नहीं देता है, और बताया, यदि कोई है, समुचित कराधान अधिकारी को वापस नहीं कर देता है।

6. प्रत्येक "घ" में प्रमाणपत्रों के अभिलेखों का प्रयोग, सांभलना, अनुरक्षण आदि :—

(1) ऐसा व्योहारी, जो रजिस्ट्रीकृत व्योहारी नहीं है, तो सरकार को अपने विक्रयों की बाबत, अधिनियम की धारा 8 की उपधारा (1) के खंड (क) के अधीन रियायती दर पर कर का सदाय करना चाहता है, केन्द्रीय नियमों के नियम 12 के उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट प्रत्येक "घ" के निवाह, धारा 8 की उपधारा (1) के खंड (ख) में विनिर्दिष्ट कोई प्रमाणपत्र स्वीकार नहीं करेगा।

(2) इसके पूर्व कि केना सरकार विक्रेता व्योहारी को उपनियम (1) के अधीन प्रत्येक "घ" में प्रमाणपत्र के उक्त प्रमाणपत्र में सभी विनिर्दिष्ट अधिनियम (8) के उपनियम (4) के खंड के अधीन सरकार द्वारा इस निमित्त सम्यक् रूप में प्राधिकृत अधिकारी द्वारा मौलबद और हस्ताक्षरित की जाएगी और "मूल प्रति" और दूसरी प्रति चिह्नित उसके दो भाग, विक्रेता व्योहारी के हवाले किए जाएंगे और ऐसे अधिकारी द्वारा प्रतिर्ण रख लिया जाएगा और पांच वर्ष या ऐसी और अवधि के लिए जो पर्याप्त कारण के लिए विक्रय कर आयुक्त द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए रखे जाएगी

(3) ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्योहारी जो रजिस्ट्रीकृत व्योहारी नहीं है, सरकार को किए विक्रयों की बाबत कर की रियायती दर का दावा करना है, ऐसे दावों की बाबत, नियम 8 के उपनियम (4) में यथानिर्दिष्ट विनिर्दिष्टों देने हुए तब तक वे जाय हों, प्रत्येक 1 में अपनी विवरणों के साथ ऐसे विवरणों की सूची, सत्यन करेगा और प्रत्येक "ग" में घोषणा के लिए निर्णय का उक्त उपनियम के प्रयोजन के लिए यह सर्व लगता जाएगा कि वह प्रत्येक "घ" में प्रमाणपत्र के प्रविष्टि है।

(4) अधिनियम की धारा 8 की उपधारा (1) और (4) के प्रयोजन के लिए वह विक्रेता व्योहारी जिसे उपनियम (2) के अधीन सरकार के प्राधिकृत अधिकारी द्वारा प्रत्येक "घ" में प्रमाणपत्र के दो भाग दिए जाते हैं उनमें से प्रमाणपत्र के "मूल प्रति" चिह्नित भाग निर्वाण के समय तब समुचित कराधान अधिकारी का भेजेगा। समुचित कराधान अधिकारी अपने विक्रेतावत्, विक्रेता व्योहारी को भी प्रमाणपत्र की चिह्नित "दूसरी प्रति" के भाग को निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करने की अपेक्षा कर सकेगा।

7. वह अधिकारी जिसमें प्रत्येक I या प्रत्येक II में प्रमाणपत्र प्राप्त किए जा सकते हैं। ऐसे प्रमाणपत्रों आदि के प्रयोग अभिविक्षा और अभिलेखों का अनुरक्षण :

(1) अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (2) के प्रथम पञ्चात् के खंड (क) में विनिर्दिष्ट प्रमाणपत्र केन्द्रीय नियमों के नियम 12 के उपनियम (1) में विनिर्दिष्ट प्रत्येक I या प्रत्येक II में ही जारी या स्वीकार नहीं किया जाएगा जब तक उक्त अप्रचलित या अधिविधिमाल्य घोषित नहीं किया गया है। ऐसे प्रत्येक समुचित कराधान अधिकारी से आवेदन पर प्राप्त किए जाएंगे।

(2) समुचित कराधान अधिकारी, उपनियम (1) के अधीन आवेदन करने वाले व्योहारी को, उक्त सूचना में खाली प्रत्येक देगा जिसने उसे सुनिश्चित प्रतीत हों :

परन्तु यह कि 25 प्रत्येक की प्रत्येक पुरतक के लिए 12,50 रु० की फीस संदेय होंगे और ऐसी फीस समुचित कराधान अधिकारी द्वारा दिए गए प्रत्येक प्राप्त करने के प्रमाणपत्र, व्योहारी द्वारा दी जाने वाली रसीद पर, न्यायालय फीस स्टाम्प स्टाम्प लगाकर संदेय की जाएगी।

(3) किसी विक्रेता व्योहारी द्वारा, किसी केना व्योहारी को, यथास्थिति, प्रत्येक I या II में प्रमाणपत्र देने से पूर्व प्रमाणपत्र में सभी अपेक्षित विनिर्दिष्टों भरेगा और उक्त प्रमाणपत्र में हरा प्रयोजन के लिए उपबंधित स्थान पर अपने हस्ताक्षर भी करेगा। तत्पश्चात् विक्रेता व्योहारी "मूल प्रति" और "दूसरी प्रति" चिह्नित किए गए उसके दो भाग केना व्योहारी के हवाले करेगा और प्रतिर्ण अपने पास रख लेगा जो पांच वर्ष की या ऐसा और अवधि के लिए जो पर्याप्त कारण के लिए, विक्रय कर आयुक्त द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए, रखी जानी चाहिए।

परन्तु ऐसा कोई एकल प्रमाणपत्र एक से अधिक विक्रय के संबन्धित के लिए नहीं होगा निवाह ऐसे मामलों में जहाँ एक प्रमाणपत्र के अंतर्गत आने वाली रकम 10,000 रु० से अधिक नहीं है।

(4) प्रत्येक I का प्रयोग ऐसे विक्रय के संबंध में किया जाएगा जिसके लिए छूट का दावा किया जाता है और जहाँ ऐसा विक्रय प्रथम विक्रय के मुख्य पञ्चात् किया जाता है और प्रत्येक II का प्रयोग पञ्चात्पूर्व सभी विक्रयों के लिए किया जाएगा।

(5) कोई रजिस्ट्रीकृत व्योहारी जो अन्य रजिस्ट्रीकृत व्योहारी को या सरकार को जो रजिस्ट्रीकृत व्योहारी नहीं है पञ्चात् नहीं विक्रय के संबंध में अधिनियम की धारा 6 की उपधारा 2 के अधीन कर से छूट का दावा करता है ऐसे दावों की बाबत प्रत्येक 1 में अपनी विवरणों के साथ ऐसे विवरणों की सूची सत्यन करेगा अगले उक्त निम्नलिखित विनिर्दिष्टों दशित की जाएगी, अर्थात् विक्रय का क्रम सदाय और तारीख, कैल भीमो,

व्योहारी का नाम या सरकार जिसको माल विक्रय किया जाता है विक्रय कीमत की राशि, उस व्योहारी का नाम और पता जिससे उसके द्वारा माल ख़य किया गया था और, यथास्थिति, प्रकृष "ग" में घोषणा, प्रकृष "ब" में प्रमाणपत्र और प्रकृष ५ 1 या ५ 2 में प्रमाणपत्र का प्रम संख्या का निर्देश, यदि ऐसे प्रकृष विवरणी देने के समय उनके द्वारा प्राप्त कर लिए जाते हैं।

(6) अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (2) के प्रयोजन के लिए परचातुर्वर्षी विक्रय करने वाला क्रेता व्योहारी जिसे उपनियम (3) के अधीन प्रथम विक्रेता व्योहारी द्वारा प्रकृष ५ 1 या प्रकृष ५ 2 में प्रमाणपत्र के भाग हवाले किए जाते हैं परचातुर्वर्षी विक्रयों की बाबत "मूल प्रति" चिह्नित प्रमाणपत्र का भाग समुचित कराधान अधिकारी को उसी अधिकारी द्वारा उसके निर्धारण के समय तक भेजेगा। इसी प्रकार और प्रकृष ५ 1 ५ 2 में प्रमाणपत्र के साथ वह प्रकृष "ग" में तत्स्थानी घोषणा का "मूल प्रति" चिह्नित भाग उसी समुचित कराधान अधिकारी को भेजेगा। समुचित कराधान अधिकारी अपने विवेकानुसार परचातुर्वर्षी विक्रयों की बाबत कर से छूट का दावा करने वाले विक्रेता व्योहारी से, यथास्थिति, प्रकृष ५ 1 या ५ 2 में प्रमाणपत्र का भाग और यथास्थिति, प्रकृष "ग" में घोषणा या प्रकृष "ब" में प्रमाणपत्र जो "दूसरी प्रति" में चिह्नित है निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करने के लिए निर्देश दे सकेगा।

(7) कोई व्योहारी जिसे समुचित कराधान अधिकारी द्वारा प्रकृष ५ 1 या ५ 2 में प्रमाणपत्र जारी किया जाता है उसे अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (2) के प्रयोजन के लिए ही किसी व्यक्ति को अंतरित कर सकेगा, अन्यथा नहीं।

(8) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्योहारी जिसे समुचित कराधान अधिकारी द्वारा प्रकृष ५ 1 या ५ 2 में कोई प्रमाणपत्र जारी किया जाता है प्रकृष 3 में रजिस्टर में उक्त अधिकारी से प्राप्त होने वाले प्रत्येक ऐसे प्रकृष का सच्चा और पूरा लेखा रखेगा। यदि ऐसा कोई प्रकृष खो जाता है या नष्ट हो जाता है या चोरी हो जाता है तो व्योहारी इस तथ्य की उक्त अधिकारी को तत्काल रिपोर्ट देगा। प्रकृष 3 में रजिस्टर के दिव्यगियां स्तंभ में समुचित प्रविष्टियां करेगा और जो जाने, नष्ट होने या चोरी की सार्वजनिक सूचना जारी करने के लिए ऐसे अन्य कदम उठाएगा जो उक्त अधिकारी निर्देश करे। प्रकृष 3 में उक्त रजिस्टर समुचित कराधान अधिकारी द्वारा जब कभी अपेक्षित किया जाए मर्यापन के लिए प्रस्तुत किया जाएगा।

(9) नियम 5 के उपनियम (7) और उपनियम (9) से (13) तक के उपबंध प्रकृष ५ 1 या ५ 2 में प्रमाणपत्रों के संबंध में ऐसे परिवर्तनों सहित लागू होंगे जो परिस्थितियों से अपेक्षित हो मानो उनमें प्रकृष "ग" में घोषणाओं के संबंध में निर्देश के अंतर्गत प्रकृष ५ 1 या ५ 2 के प्रति निर्देश भी हैं।

10 (क) जहां प्रकृष ५ 1 या ५ 2 में खाली या सम्पन्न रूप से भरा हुआ प्रमाणपत्र खो जाता है वहाँ वह तब खो जाता है जब वह जारी करने वाले व्योहारी के कब्जे में हो या क्रेता व्योहारी को अभिवहन में हो तो जारी करने वाला व्योहारी इस प्रकार खोये गए प्रत्येक प्रमाणपत्र की बाबत समुचित कराधान अधिकारी को जिससे उक्त प्रमाणपत्र प्राप्त किया गया था ऐसी राशि के लिए अनिवार्य बंधपत्र देगा जो मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उक्त अधिकारी द्वारा निर्धारित की जाए और इस प्रकार खोये गए प्रमाणपत्र के लिए दूसरी प्रति भी जारी करेगा। यह अनिवार्य बंधपत्र परचातुर्वर्षी विक्रय करने वाले और उसी विक्रय पर छूट का दावा करने वाले व्योहारी द्वारा समुचित कराधान अधिकारी को दिया जाएगा, यदि उसके द्वारा प्राप्त किया गया उक्त प्रकृष में सम्पूर्ण रूप से भरा हुआ प्रकृष खो जाता है वहाँ वह तब खो जाता है जब वह उसकी अभिरक्षा में है या जब वह समुचित कराधान अधिकारी की अभिवहन में है।

(ख) वह व्योहारी जो खण्ड (क) के उपबंधों का अनुपालन करने के पश्चात अन्य व्योहारी को ऐसा प्रमाणपत्र की दूसरी प्रति जारी करता

है, निम्नलिखित घोषणा करेगा, जो लेखबद्ध होगी और उनके द्वारा प्रमाणपत्र की उक्त दूसरी प्रति के प्रत्येक तीनों भागों पर पृष्ठ के आगमर सम्पन्न रूप से हस्ताक्षरित होगी :

"मैं इसके द्वारा यह घोषणा करता हूँ कि यह प्रकृष ५ 1/५ 2 में ..... में प्रमाणपत्र की दूसरी प्रति है, जो तारीख ..... को हस्ताक्षरित की गई और श्री ..... को जारी की गई जो ..... राज्य) का रजिस्ट्रीकृत व्योहारी है और जिनका रजिस्ट्रीकरण संख्यांक ..... है।"

8. कतिपय विक्रयों की बाबत विनिष्टियां: ऐसा रजिस्ट्रीकृत व्योहारी जिसने ऐसा विक्रय किया है जिसकी बाबत अधिनियम की धारा 8 की उपधारा (1) में निर्दिष्ट कर का शिथिलता दर का दावा उनके द्वारा नहीं किया गया है, प्रकृष 1 में अपनी विवरणों के साथ ऐसे विक्रयों की सूची संलग्न करेगा जिसमें नियम 5 के उपनियम (4) में निर्दिष्ट विनिष्टियों जहाँ तक लागू हों, संलग्न करेगा।

9. वह अधिकारी जिससे प्रकृष "ब" में घोषणाएं अभिप्राप्त की जा सकेंगी, ऐसी घोषणाओं आदि का उपयोग, अभिरक्षा और अनुरक्षण 1-(1) अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) में निर्दिष्ट घोषणा, व्योहारी, या कारखाने के स्थान के प्रधान अधिकारी या किसी अधिकारी या प्रधान द्वारा ही दिया या स्वीकृत किया जाएगा जब वह केन्द्रीय नियमों के नियम 12 के उपनियम (5) में निर्दिष्ट प्रकृष "ब" में जो अप्रचलित या अधिविधायक घोषित नहीं किया गया है, अन्यथा नहीं। प्रकृष "ब" में ऐसी घोषणाएं उस व्यक्ति द्वारा समुचित कराधान अधिकारी से अभिप्राप्त की जाएगी जिसे माल अंतरित किया जा रहा है।

(2) समुचित कराधान अधिकारी, उपनियम (1) के अधीन आश्रय करने वाले व्यक्ति को उतने खाली प्रकृष देगा जितने उसे मुक्तिपूर्ण प्रतीत हो।

परन्तु यह कि 25 प्रकृषों की प्रत्येक पुस्तक के लिए साढ़े बारह रुपए की फीस संवेद्य होगी और ऐसी फीस, व्यापारिक फीस स्टाम्प या स्टाम्पों के रूप में संवेस की जाएगी जो व्योहारी द्वारा समुचित कराधान अधिकारी द्वारा प्रस्तुत प्रकृषों की प्राप्ति के प्रमाण स्वरूप दी जाने वाली रसीद पर चिपकाई जाएगी।

(3) यथास्थिति, व्योहारी, या कारखाने के स्थान का प्रधान अधिकारी, या अधिकारी या प्रधान द्वारा माल का अंतरण करने वाले व्यक्ति को प्रकृष "ब" में घोषणा प्रस्तुत करने के पढ़ने वह उस घोषणा में सभी अपेक्षित विनिष्टियां मरेगा और वह उस घोषणा पर उन स्थान पर हस्ताक्षर करेगा जो इस प्रयोजन के लिए उपबंधित है। उनके पश्चात वह उसके "मूल प्रति और दूसरी प्रति" चिह्नित दो भाग माल का अंतरण करने वाले व्यक्ति को दे देगा और "प्रतिपत्ति अपने पास रखेगा जिसे पांच वर्षों तक या उतनी और अवधि तक अनुरक्षित किया जाना चाहिए जितनी विक्रय कर आयुक्त द्वारा, पर्याप्त कारण से विनिष्टित की जाए।

(4) ऐसा व्यक्ति जिसने प्रकृष "ब" में समुचित कराधान अधिकारी से घोषणाएं अभिप्राप्त कर ली हैं, प्रकृष 4 में रजिस्टर बनाए रखेगा वही रजिस्टर, उसे प्रस्तुत माल की बाबत बनाए रखे गए तत्संबंधी लेखाओं के साथ जब कभी समुचित कराधान अधिकारी द्वारा उसकी अपेक्षा की जाए, मर्यापन के लिए प्रस्तुत किया जाएगा।

(5) समुचित कराधान अधिकारी, अपने विवेकानुसार किसी व्योहारी कारखाने के स्थान को प्रधान अधिकारी, अधिकारी या प्रधान से, जिसके बारे में उसे विश्वास है, कि उसे अन्य राज्यों से माल प्रेषित किया गया है या उसने अन्य राज्यों को माल प्रेषित किया है, ऐसे माल के प्रेषण की बाबत बनाए रखे गए लेखाओं को मर्यापन के लिए प्रस्तुत करने की अपेक्षा कर सकेगा जिससे कि वह अपना वह मर्यापन करने में

समर्थ हो सके कि एक राज्य से दूसरे राज्य को माल का प्रेषण, अंतर्राष्ट्रीय विषय के रूप में नहीं है या यह कि प्राप्त किए गए माल का लेखा जोखा बनाए रखा गया है। ऊपर निर्दिष्ट लेखा प्रस्तुत करने की अपेक्षा करने के लिए समुचित कराधान अधिकारी संबंधित व्यक्ति पर प्रत्येक 5 में सूचना की तारीख करेगा।

(6) ऐसा व्यक्ति जो किसी माल की बाबत इस बात का दावा करता है कि वह अधिनियम के अधीन इस आधार पर कर का दावा नहीं है कि एक राज्य से दूसरे राज्य में माल के अंतरण का कारण यथा स्थिति, उसके द्वारा या उसके अधिकारी या प्रधान के द्वारा ऐसे माल का कारबार के अन्य स्थान पर अंतरण है और वह विषय के कारण नहीं किया गया है वह समुचित कराधान अधिकारी को अंतरिनी से प्राप्त प्रत्येक "ब" में घोषणा के मूल प्रति विनिर्दिष्ट भाग को प्रस्तुत करेगा और ऐसे अंतरणों के समर्थन में सभी साक्ष्य भी प्रस्तुत करेगा। तथापि समुचित कराधान अधिकारी अपने विवेकानुसार प्रत्येक "ब" से घोषणा के "मूल प्रति" प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति से उक्त घोषणा के "दूसरी प्रति" विनिर्दिष्ट भाग निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करने की अपेक्षा कर सकेगा।

ऊपर निर्दिष्ट प्रत्येक "ब" में घोषणा की "मूल प्रति" विनिर्दिष्ट भाग उपनियम (5) में निर्दिष्ट सूचना में विनिर्दिष्ट समय के अंतर समुचित कराधान अधिकारी की प्रस्तुत किया जाएगा किन्तु यह समय सूचना की तारीख का तारीख से पन्द्रह दिन से कम का नहीं होगा। तथापि यह समय समुचित कराधान अधिकारी द्वारा अच्छे और पर्याप्त कारणों से बढ़ाया जा सकेगा।

(7) कोई भी व्यक्ति जिसे समुचित कराधान अधिकारी द्वारा प्रत्येक "ब" में घोषणा जारी की गई है। इसे अधिनियम की धारा 6 के प्रयोजनों के लिए ही किसी अन्य व्यक्ति को अंतरित करेगा, अन्वया नहीं।

(8) नियम 5 के उपनियम (7) और (9) से (13) के उपबन्ध प्रत्येक "ब" में घोषणा के संबंध में ऐसे परिवर्तनों के साथ लागू होंगे जो परिस्थितियों से अपेक्षित हों मालों उनसे प्रत्येक "ब" में घोषणा के निर्देश में प्रत्येक "ब" में घोषणाओं के प्रतिनिर्देश भी हैं।

10. (1) जब समुचित कराधान अधिकारी, अधिनियम के अधीन किसी व्योहारी से संदेय केन्द्रीय विषय कर का निष्पारण या पुनर्निष्पारण करना आवश्यक समझता है तब वह यथास्थिति प्रत्येक 6 या प्रत्येक 7 में व्योहारी पर सूचना की तारीख कर सकेगा और ऐसे कर निष्पारण या पुनर्निष्पारण की बाबत दावरा और बाधर हजेरी विषय कर विनियम, 1979 और उसके अधीन बनाए गए नियम, जहाँ तक हो सके, लागू होंगे।

(2) कर निष्पारण या पुनर्निष्पारण का आदेश प्रत्येक 8 में पारित किया जाएगा।

(3) यदि कर निष्पारण या पुनर्निष्पारण के परिणामस्वरूप कोई अतिरिक्त राशि संदेय हो तो व्योहारी पर प्रत्येक 7 में सूचना तारीख की जाएगी और मांग किए गए संदाय की बाबत, दावरा और बाधर हजेरी विषय कर नियम, 1983 में अधिकृत प्रक्रिया का, जहाँ तक हो सके, अनुसरण किया जाएगा।

11. अधिनियम के अधीन संदेय कर की उचित बगुनी के लिए या प्रत्येक "ई० ह० या ई० 2" प्रत्येक "ब" और प्रत्येक "ग" की उचित अभिरक्षा और उपयोग के लिए प्रतिभूति देना जहाँ अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (2क) या उपधारा (3क) के उपबन्धों के अधीन किसी व्यक्ति से प्रतिभूति की मांग की जाती है, वहाँ ऐसी प्रतिभूति निम्नलिखित में से किसी रीति में दी जा सकेगी, अर्थात्:—

(क) समुचित कराधान अधिकारी की मार्फत भारत के राष्ट्रपति के पास गिरवी रखे गए डाकघर बचत बैंक लेखा में किसी निधि के रूप में;

(ख) समुचित कराधान अधिकारी की मार्फत भारत के राष्ट्रपति को दी गई किसी राष्ट्रीयकृत बैंक की बैंक प्रत्याभूति के रूप में; ऐसी प्रत्याभूति, किसी ऐसे अन्य बैंक द्वारा भी दी जा सकेगी, यदि इसकी स्वीकृति की प्रस्तावना समुचित कराधान अधिकारी द्वारा बैंक की शोचन श्रमता की बाबत उसका समाधान हो जाने के पश्चात की जाती है।

(ग) समुचित कराधान अधिकारी की मार्फत भारत के राष्ट्रपति के पास गिरवी रखे गए राष्ट्रीय बचत पत्रों के रूप में।

(घ) केन्द्रीय सरकार का स्वीकार्य कम से कम एक प्रतिभूति सहित समुचित कराधान अधिकारी की मार्फत भारत के राष्ट्रपति के प्रतिभूति बंधपत्र के रूप में।

12. जहाँ किसी व्यक्ति से, अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (3ग) के उपबन्धों के अधीन किसी प्रतिभूति की मांग की जाती है वहाँ ऐसे व्यक्ति द्वारा ऐसी प्रतिभूति, उसी रीति में दी जावेगी जो नियम 11 में उपबन्धित है।

13. जहाँ किसी व्यक्ति से, अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (3क) के उपबन्धों के अधीन प्रतिभूति की मांग की जाती है, वहाँ ऐसी प्रतिभूति उसी रीति में, जो नियम 11 में उपबन्धित है और आदेश की तारीख से साठ दिन की अवधि के भीतर दी जाएगी।

14. अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (3ज) के अधीन फाइल की गई किसी अपील में अनुसरण में की जाने वाली प्रक्रिया:

(1) अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (3ग) में निर्दिष्ट अर्कब दावरा और बाधर हजेरी विषय कर विनियम, 1978 की धारा 31 की उपधारा (1) के अधीन फाइल की गई अपीलों को सुनवाई करने के लिए दावरा और बाधर हजेरी विषय कर नियम, 1983 के नियम 35 में विनिर्दिष्ट प्राधिकारी की होगी। उक्त प्राधिकारी को उसमें उसके पश्चात अपील प्राधिकारी कहा जाएगा।

(2) अपील का ज्ञापन, अपीलार्थी या उसके अधिकारी द्वारा, अपील प्राधिकारी को, प्रत्येक 10 में, दो प्रतियों में प्रस्तुत किया जाएगा या इसके रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा अपील प्राधिकारी को भेजा जा सकेगा, और इसे स्वयं अपीलार्थी द्वारा, या उसके द्वारा लिखित रूप में इस निमित्त सम्यक रूप से प्राधिकृत किसी व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षरित किया जाएगा।

(3) अपील के ज्ञापन की बाबत 10 रूप्य की फीस संदेय होगी, और उसे उक्त ज्ञापन पर व्यापारिक फीस स्टाम्पों को लगाकर संवल किया जाएगा। अपील के ज्ञापन के साथ, उस आदेश की, जिसके विरुद्ध अपील की गई है; एक प्रमाणित प्रति दी जाएगी, और उस पर अपीलार्थी या उसके अधिकारी द्वारा निम्न प्रकार पृष्ठांकन भी किया जाएगा:

(क) यह कि उससे, समुचित कराधान अधिकारी द्वारा मांग की गई प्रतिभूति की राशि संदेय कर दी गई है;

परन्तु यह कि उक्त पृष्ठांकन वहाँ आवश्यक नहीं होगा जहाँ अपील प्राधिकारी ने पर्याप्त कारणों से, व्यक्ति व्यक्ति को, संपूर्ण प्रतिभूति या प्रतिभूति का कोई भाग दिए बिना अपील प्रस्तुत करने के लिए अनुज्ञा दे दी थी।

(ख) यह कि अपील के ज्ञापन में उल्लिखित मध्य उसके सर्वोपलब्ध ज्ञान और विश्वास के अनुसार सही है।

(4) यदि इस निमित्त व्यक्तिगत अक्षर दिए जाने के पश्चात अपीलार्थी उपनियम (2) और (3) की अपेक्षाओं का अनुपालन करने में असमर्थ रहता है तो अपील संश्लेष, नामंजूर की जा सकेगी।

(5) यदि अपील प्राधिकारी उसकी अपील संश्लेष नामंजूर नहीं करता है तो वह सुनवाई के लिए कोई तारीख नियत करेगा और वह तारीख, अपीलार्थी और समुचित कराधान अधिकारी की अधिसूचित करेगा।

(6) यदि अपील प्राधिकारी ऐसा जांच तो वह अधीनार्थी द्वारा उसकी ओर से प्रस्तुत किए गए साक्ष्य को सुनने और अश्विखित करने के लिए या ऐसी जांच करने के लिए जो वह निर्देश करे, किसी अधिकारी या निरीक्षक को प्रतिनियुक्त कर सकेगा। इस प्रकार प्रतिनियुक्त अधिकारी या निरीक्षक को स्थल पर ऐसी जांच करने का, जो वह मामले के लिए आवश्यक समझे प्राधिकार होगा।

(7) अपील प्राधिकारी, अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (3) के अधीन फाइल की गई किसी अपील का निपटारा करते में—

(क) समुचित कराधान अधिकारी द्वारा मांग की गई प्रतिभूति की राशि को पुष्टि, उसमें कमी, उसमें वृद्धि या उसको वापिस कर सकेगा; या

(ख) समुचित कराधान अधिकारी का आदेश अपास्त कर सकेगा और उसका अधिकारी को, ऐसी और जांच करने के पश्चात जो निर्देशित की जाए, एक नया आदेश करने का निर्देश कर सकेगा; या

(ग) ऐसा आदेश पारित कर सकेगा जो वह उपयुक्त समझे।

15. दाररा और नागर हवेली बिक्रय कर विनियम, 1978 और उसके अधीन बनाए गए नियमों का लागू होना —

दाररा और नागर हवेली बिक्रय कर विनियम 1978 और उसके अधीन बनाए गए नियम के (जिनके अन्तर्गत प्ररूपों का उपयोग भी है) के उपबन्ध अधिनियम के प्रयोजनों को क्रियान्वित करने वाली सभी कार्यवाहियों या अन्य आधुनिक मामलों को जिनके लिए इन नियमों या केन्द्रीय नियमों से कोई उपबन्ध नहीं किया गया है यथा आवश्यक परि-वर्तनों सहित लागू होंगे।

#### 16. शास्ति

यदि कोई व्यक्ति, इन नियमों में से किसी का भंग करेगा तो वह जुमाने से, जो पांच सौ रूपए तक का हो सकेगा, बंझनी होगा और जब अपराध चालू रहने वाला अपराध है, दैनिक जुमाने से जो प्रत्येक दिन के लिए जिनके द्वारा अपराध चालू रहता है पचास रूपए प्रतिदिन तक का हो सकेगा।

दाररा और नागर हवेली के प्रशासक द्वारा और उसके नाम में  
एम०एम० कोववेकर, प्रशासक का सचिव  
निलवास्ता।

#### प्ररूप 1

केन्द्रीय बिक्रय कर (दाररा और नागर हवेली, नियम, 1983 के नियम 4 के अधीन विवरणी का प्ररूप

..... से ..... तक की अवधि के लिए विवरणी

रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र सं० .....  
व्योहारी का नाम .....  
व्योहारी का पता .....  
व्योहारी की प्राप्ति .....  
.....

(क्या वैयक्तिक, भागीदारी, कंपनी, हिस्से, अभिवक्त कुटुम्ब, संगम, क्लब, संरक्षक या ब्यासी है)

अभिनाम जिसके अधीन कारबार चलाया जाता है .....

1. माल के बिक्रय की जाबत अवधि के दौरान व्योहारी द्वारा प्राप्त और प्राप्त योग्य कुल रकम .....  
कटौती करे—

(1) राज्य के (जैसा अधिनियम की धारा 4 में परिभाषित है) बाहर माल का बिक्रय .....

(2) भारत में (जैसा अधिनियम की धारा 5 में परिभाषित है) बाहर निर्यात या उसमें आयात के दौरान माल का बिक्रय .....

2. अतिशेष—अन्तरराज्यिक बिक्रय और राज्य के भीतर की बिक्रय का आबर्तन कटौती करें—राज्य के भीतर बिक्रय का आबर्तन .....

3. अतिशेष—अन्तरराज्यिक बिक्रय का आबर्तन कटौती करें—

(1) दुलाई या परिधान की लागत या प्रतिगठान की लागत जहां ऐसी लागत अन्तरराज्यिक बिक्रय पर पूर्ण रूप से प्रभावित की जाती है .....

(2) तकद बढ़े के रूप में अनुज्ञात राशियां यदि आबर्तन में उन्ही राशियों को सम्मिलित सम्झा जाता है .....

(3) बहित अवधि के भीतर केना द्वारा

बापम किए गए माल का बिक्रय कीमत .....

4. अतिशेष—अन्तरराज्यिक बिक्रयों का कुल आबर्तन कटौती करे—

(1) अधिनियम की धारा 6(2) के अधीन पञ्चागतवर्ती बिक्रय जो कराधेय नहीं है .....

(2) अधिनियम की धारा 8(2क) के अधीन बिक्रय जो कराधेय नहीं है .....

5. अतिशेष—अन्तरराज्यिक बिक्रयों का कुल कराधेय आबर्तन .....

6. उक्त कराधेय आबर्तन का माल के अनुसार विभाजन और उन पर संदेय कर कराधेय बिक्रय सहाय कराधेय की रकम की रकम

रु० रु०

(1) 4 प्र० की दर से कराधेय घोषित माल का बिक्रय .....

(2) 4 प्र० की दर से कराधेय प्ररूप "ग" पर रजिस्ट्रीकृत व्योहारियों को बिक्रय .....

(3) 4 प्र० की दर से कराधेय प्ररूप "ब" में प्रमाणपत्र पर रजिस्ट्रीकृत व्योहारी से भिन्न सरकार को बिक्रय .....

(4) ..... की दर कराधेय रजिस्ट्रीकृत व्योहारियों से भिन्न व्यक्तियों को बिक्रय .....

(5) अधिनियम की धारा 8 की उपधारा (5) के अधीन अधिसूचित माल का विक्रय	.....
(6)	.....
(7)	.....
	रु०                      रु०
कुल	.....

7. चालान के संख्यांक, तारीख के प्रति-  
निर्देश और उसके द्वारा संदर्भ रकम

टिप्पण 1: मैं इस विवरणी के साथ अन्तरराष्ट्रियक विक्रयों की सूची,  
नियमों के नियम 5 के उप नियम (4) और नियम 6 के  
उपनियम (3) द्वारा अपेक्षित उनकी विशिष्टियों सहित भेज  
रहा हूँ।

टिप्पण 2: मैं इन नियमों के नियम 8 के अधीन अपेक्षित ऐसे अंतर-  
राष्ट्रियक विक्रयों की सूची भेज रहा हूँ जिसमें कर की किसी  
रियायती दर का वाता नहीं किया गया है।

टिप्पण 3: मैं अधिनियम की धारा 6(2) के अधीन वाताकृत छूट की  
बाबत इस नियमों के नियम 7 के उपनियम (5) द्वारा  
अपेक्षित परवानवर्ती विक्रयों की सूची भी भेज रहा हूँ।

मैं घोषणा करता हूँ कि इस विवरणी में किया गया कबज और दी  
गई विशिष्टियाँ सच्ची और पूर्ण हैं।

स्थान :

हस्ताक्षर :

तारीख :

प्राप्ति :

उपाबंध :

(कुल संख्या)

## प्ररूप 2

केन्द्रीय विक्रय कर (दादरा और नागर हवेली) नियम, 1983 के नियम 5(8) के अधीन रखा

गया प्ररूप 'म' म शासना का रजिस्टर

प्राप्तिया					जारी									
प्ररूपों की प्राप्ति की तारीख	बहु प्राधिकारी जिससे प्राप्त हुए हैं	प्राप्त की गई पुस्तक का क्रम संख्याक	सं० पुस्तक में अनविष्ट घोषणाओं के क्रम सं०	से तक करने की तारीख	प्ररूप जारी करने की तारीख	पुस्तक के क्रम सं० के प्रति निर्देश	जारी किए गए प्ररूप के क्रम सं० के प्रति निर्देश	उस विवेता ब्योहारी का नाम और पता जिनमें जारी किया गया है	उस आदेश का सं० और तारीख जिनकी बाबत जारी किया गया है	विवेता का कैजमेमो/ चालान सं० जिसमें सबंध में प्ररूप जारी किया गया है	मान का मूल्य	माल के लिए रेल रसीद या अन्य बाहक के चालान का सं० और तारीख	विक्रय कर प्राप्ति-कारा का अभ्यपित प्ररूप यदि कोई हो, के प्रति निर्देश	टिप्पणिया
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15

## प्ररूप 3

केन्द्रीय विक्रय कर (दादरा और नागर हवेली) नियम, 1983 के नियम (8) के अधीन

रखे गए प्ररूप ई० 1/ई० 2 में प्रमाणपत्रों का रजिस्टर

प्राप्तिया					जारी											
प्राप्ति की तारीख	बहु प्राधि-कारी जिससे प्राप्त हुए हैं	प्राप्त की गई पुस्तक का क्रम संख्याक	सं० पुस्तक में अनविष्ट के प्ररूपों के क्रम सं०	से तक करने की तारीख	प्ररूप जारी करने की तारीख	पुस्तक के क्रम सं० के प्रति निर्देश	जारी किए गए प्ररूप के क्रम सं० के प्रति निर्देश	उस क्रेता ब्योहारी का नाम और पता जिनमें जारी किया गया है	क्रेता के उस क्रम आदेश का सं० और तारीख जिसकी बाबत जारी किया गया है	क्रेता से प्राप्त तत्त्वज्ञानी प्ररूप 'ग' बाबत जारी तारीख	उस माल का वर्ण जिसकी बाबत जारी किया गया है	माल का मूल्य	कैज मेमो/ चालान सं० जिसके सबंध में जारी किया गया है	माल के लिए रेल रसीद या अन्य बाहक के चालान का सं० और तारीख	विक्रय कर प्राप्ति-कारा का अभ्यपित प्ररूप, यदि कोई हो, के प्रति निर्देश	टिप्पणिया
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	



## प्रारूप 4

केन्द्रीय विक्रय कर (दादरा और नागर हवेली) नियम, 1983 के नियम 9(4) के अधीन

रखा गया प्रारूप "ब" में घोषणाओं का रजिस्टर

प्राप्तियाँ					जारी									
प्रति की सारांश	वह प्राधिकारी जिससे प्राप्त हुई है	प्राप्त की गई पुस्तक का क्रम संख्या	सं० . . . . . से सं० . . . . . तक पुस्तक में अंत-विष्ट प्रारूपों के क्रम सं०	प्रारूप जारी करने की तारीख	पुस्तक के क्रम संख्यांक के प्रति निर्देश	जारी किए गए प्रारूप के क्रम संख्यांक के प्रति निर्देश	माल के अंतरक का नाम पता	माल के अंतरक के लिए उस प्रादेश का सं० और तारीख जिसके संबंध में प्रारूप जारी किया गया है।	अंतरक पर प्राप्त मात्र का वर्णन	प्राप्त किए गए माल का मूल्य	परिधान चालान या परिधान नोट सं० जिसके अधीन माल प्राप्त किया जाता है	प्राप्त माल के लिए रेल वाहक का चालान का सं० और तारीख	विक्रय कर प्राधिकारियों को अभ्यर्पित प्रारूप, यदि कोई हो के प्रति निर्देश	टिप्पणियाँ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15

## प्रारूप 5

केन्द्रीय विक्रय कर (दादरा और नागर हवेली) नियम, 1983 के नियम

9(5) के अधीन सूचना

प्रेषिनी ..... (व्यक्ति का नाम)  
..... (पता)

\* (1) मुझे इस बात की जानकारी मिली है कि आपके द्वारा कुछ माल अन्य राज्य (राज्यों) को प्रेषित किया गया है जिसकी बाबत मैं अपना यह समाधान करना चाहता हूँ कि इस प्रकार का/के प्रेषण अंतर-राज्यिक विक्रय की प्रकृति का/के है या अन्यथा;

(2) मुझे इस बात की जानकारी मिली है कि आपको कुछ माल कारबार के प्रयोजन के लिए प्रेषित किया गया है और मैं अपना यह समाधान करना चाहता हूँ कि आपको प्रेषित ऐसे माल का सम्यक लेखा जोखा रखा गया है, और केन्द्रीय विक्रय कर (दादरा और नागर हवेली) नियम 1983 के निष्प 9 के उपनियम (5) के उपबन्धों के अधीन आपको निदेश दिया जाता है कि आप, ..... (स्थान) पर, ..... (समय) पर ..... तारीख से स्वयं या लिखित रूप से प्राधिकृत अधिकारी के माध्यम से हाजिर हों और तारीख ..... से तारीख ..... तक की अवधि के दौरान आपके द्वारा प्रेषित और/या आपको प्रेषित ऐसे सभी माल की बाबत रहे गए लेखाओं और दस्तावेजों को सत्यापन के लिए मेरे समक्ष प्रस्तुत करें।

आपको यह निदेश भी दिया जाता है कि आप ऊपर निर्दिष्ट प्रेषणों के संबंध में लेखाओं और दस्तावेजों के साथ आपके द्वारा रखी गई निम्नलिखित बहियाँ और दस्तावेज प्रस्तुत करें।

कृपया यह नोट कर लें कि यदि आप इस सूचना की अपेक्षाओं अनुपालन नहीं करेंगे जो आप स्वयं ऊपर निर्दिष्ट नियमों के नियम 16 के अधीन कारबाही किए जाने के भागी होंगे।

सूचा .....

हस्ताक्षर .....

स्थान .....  
तारीख .....  
समुचित कराधान अधिकारी  
कार्यालय का नाम

\*ओ लागू न हों उसे काट दें।

## प्रारूप 6

[केन्द्रीय विक्रय कर (दादरा और नागर हवेली) नियम 1983 का नियम 10(1) देखें]

दादरा और नागर हवेली विक्रय कर विनियम 1978 की धारा 20 के साथ पठित केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम 1956 की धारा 9 के अधीन निर्धारण की सूचना।

प्रेषिनी

..... (व्योहारी)

..... (पता)

केन्द्रीय विक्रय कर रजिस्ट्रेशन संख्यांक यदि कोई है—

\* (क) मेरे समक्ष साक्ष्य प्रस्तुत करने के अभाव में मेरा यह समाधान नहीं हुआ कि आपके द्वारा ..... से ..... तक की बाबत की गई विवरणी सच्ची और पूर्ण है।

\* (ख) आपने प्रमाणपत्र संख्यांक ..... के अधीन रजिस्ट्रेशन व्योहारी होते हुए भी ..... से ..... तक

की अवधि की बाबत विक्रयों की विवरणी बिहित तारीख तक प्रस्तुत नहीं की है।

\* (ग) उस जानकारी से जो मेरे कब्जे में आई है मेरा समाधान हो गया है कि आप, ..... से प्रारंभ होने वाली और ..... को समाप्त होने वाली अवधि की बाबत केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम 1956 के अधीन संदाय करने के लिए वाणी है कि आपने अपने को रजिस्ट्रेशन कराने में असफल रहे हैं।

और मुझे ऊपर उल्लिखित अवधि की बाबत दादरा और नागर हवेली विक्रय कर विनियम 1978 की धारा 20 के साथ पठित केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम 1956 के अधीन कर निर्धारण करना आवश्यक प्रतीत होता है।

आपको इसके द्वारा निदेश दिया जाता है कि आप (स्थान) ..... (तारीख) ..... (समय) ..... या लिखित रूप में सम्यक् रूप से प्राधिकृत अधिकारी द्वारा उपस्थिति हों और वहाँ उक्त समय और स्थान पर ऐसे निर्धारण के प्रयोजन के लिए किसी आपत्ति सहित, जो आप करना चाहें और कोई साक्ष्य जो उसके समर्थन में आप प्रस्तुत करना चाहें भी बिनिविष्ट लेखों और दस्तावेजों प्रस्तुत करें या कराएं।

और निम्नलिखित जानकारी भी दें

और उस तारीख और समय पर कारण बताएं कि उस अवधि के लिए आप पर निर्धारित कर के अतिरिक्त आप पर केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम के अधीन शास्ति अधिरोपित क्यों न की जाए।

सूचना का पालन करने में असफल रहने की वशा में मैं आपको और सूचना दिए बिना अपनी सर्वोत्तम विवेकबुद्धि से दादरा और नागर हवेली विक्रय कर विनियम, 1978 की धारा 20 के साथ पठित केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 के अधीन आप पर कर निर्धारण करूँगा और शास्ति अधिरोपित करूँगा।

(मुद्रा)

स्थान .....

तारीख .....

हस्ताक्षर

(समुचित कराधान अधिकारी  
निर्धारण प्राधिकारी)

(अधिकारी का नाम और पदनाम)

विक्रय कर कार्यालय

\*ओ शब्द बाक्यांश पैरा लागू न हों उन्हें काट दें।

## प्रारूप 7

[केन्द्रीय विक्रय कर (दादरा और नागर हवेली) के नियम, 1983 का नियम 10(1) देखें]

दादरा और नागर हवेली विक्रय कर विनियम, 1978 की धारा 21 के साथ पठित केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम 1956 का धारा 9 के अधीन पुनर्निर्धारण की सूचना।

प्रेषिनी

..... (व्योहारी)

..... (पता)

केन्द्रीय विक्रय कर रजिस्ट्रेशन संख्यांक यदि कोई हो मेरे पास निश्चित जानकारी के परिणामस्वरूप मेरे पास यह विश्वास करने के कारण है कि ..... से ..... तक की अवधि का

केन्द्रीय विक्रय कर से निर्धारण योग्य आपके कारबार के आवर्तन अव-  
निर्धारित किया गया है। निर्धारण से बच गया है।

मैं इसके द्वारा आपसे अपेक्षा करता हूँ कि आप इस सूचना को  
तामिल के ..... दिन के भीतर कारण बताएं कि आपके  
सामले में अनुष्यात कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए।

(मुद्रा) ..... हस्ताक्षर.....  
स्थान..... (समुचित कराधान अधिकारी  
निर्धारण प्राधिकारी)  
तारीख..... (अधिकारी का नाम और पदनाम)  
विक्रय कर कार्यालय

### प्रकरण 8

[केन्द्रीय विक्रय कर (बाहरा और नागर हवेली) नियम 1983 का  
नियम 10(2) देखें]

केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 के "अधीन निर्धारण/पुन-  
निर्धारण का आदेश।

1. रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र संख्याक .....
2. निर्धारण का वर्ष .....
- निर्धारण की अवधि ..... से ..... तक

3. व्योहारी का नाम
4. व्योहारी का पता
5. कारबार के स्थानों का अवस्थान
6. प्रस्तुत लेखा बहियें  
लेखा का बंग

- |  |                  |  |
|--|------------------|--|
| 7. सूचना की तामिल की तारीख                 | जैसा व्योहारी    | जैसा   |
| 8. अन्तरराज्यिक विक्रय का शुद्ध कुल आवर्तन | विवरणी<br>में है | निर्धारण<br>प्राधिकारी<br>द्वारा<br>अवधारित<br>किया गया<br>है। |

### 9. कटौतियाँ करें :

(i) अधिनियम की धारा 8(2क) के  
अनुसार स्थानोंय विक्रय कर बिधि  
के अधीन साधारणतया कर से छूट  
प्राप्त माल के अन्तरराज्यिक विक्रयों  
का आवर्तन

(ii) अधिनियम की धारा 8(2) के अधीन  
अकराधेय पञ्चात्त्वर्षी विक्रय।

- 10 अन्तरराज्यिक विक्रयों का शुद्ध अकराधेय  
आवर्तन

11. उपर्युक्त को माल के अनुसार विभाजन

(क) घोषित माल

(ख) अन्य माल

(i) अधिनियम की धारा 8(1) के  
अधीन रजिस्ट्रीकृत व्योहारियों या  
सरकार को विन्नेत

(ii) अन्यथा विन्नेत अर्थात् अधिनियम  
की धारा 8(2) के अधीन।

(iii) .....

योग .....

### 12.

(i) ..... प्रतिशत पर कराधेय रुपए  
से जिसमें कर की रकम .....  
रुपए है।

(ii) ..... प्रतिशत पर कराधेय....  
रुपए जिसपर कर की रकम .....  
रुपए है।

(iii)

(iv)

(v)

(vi)

13. केन्द्रीय विक्रय कर की कुल संदेय रकम

14. संदेय अवधारित की गई शास्ति

15. कुल संदेय कर और शास्ति

16. पूर्ण संवेत रकम]

17. शुद्ध शोध्य सकाया

18. शुद्ध शोध्य प्रतिवाय यदि कोई देय हो  
(कर) निर्धारण आदेश/पुननिर्धारण आदेश

(मुद्रा)

स्थान.....

हस्ताक्षर

तारीख.....

(समुचित कराधान अधिकारी  
निर्धारण प्राधिकारी)

(अधिकारी का नाम और पदनाम)  
विक्रय कर कार्यालय

\*जो लागू न हो उसे काट दें।

### प्रकरण 9

[केन्द्रीय विक्रय कर (बाहरा और नागर हवेली) नियम, 1983  
का नियम 10(3) देखें]

केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 के अधीन निर्धारण पुननिर्धारण  
के पञ्चात् मांग की अंतिम सूचना

..... विक्रय कर कार्यालय

..... तारीख .....

सं०

प्रेषित

आपको इसके द्वारा सूचित किया जाता है कि ..... से  
..... तक की अवधि के लिए, विक्रय कर, शास्ति धाधि  
का, आपका निर्धारण/पुननिर्धारण निम्न प्रकार से कर दिया गया है :--  
निर्धारण/पुननिर्धारण पर संदेय  
केन्द्रीय विक्रय कर की रकम .....

अधिरूपित शास्ति	..... ६०
कुल संवेय रकम	..... ६०
पहले संवत् रकम कम कीजिए	..... ६०
शुद्ध शोध्य बकाया	..... ६०

आपको इसके द्वारा निवेश दिया जाता है कि आप, ..... व (वर्कों में) ..... रुपए (शब्दों में) की राशि का इस सूचना की प्राप्ति की तारीख से साठ दिन के भीतर, ..... पर स्थित (स्थान) सरकारी खजाने में संवाय करें; और इसके पश्चात् एक सप्ताह के भीतर इस कार्यालय को किए गए संवाय के साक्ष्य में रसीदी बालान प्रस्तुत करें, जिसमें भसफल रहने पर उक्त राशि आपसे भूराजस्व के बकाया के रूप में वसूल की जाएगी।

संवाय के लिए बालान संलग्न है।

(मुहर)

स्थान : ..... हस्ताक्षर  
समुचित कराधान अधिकारी  
निर्धारण अधिकारी  
(अधिकारी का नाम और पदनाम)

\* जो लागू न हो उसे काट दें।

#### प्रकृ 10

[किन्नीय विक्रय कर (बावरा और नागर हवेली) नियम, 1983 का नियम 14(2) देखें]

उस आदेश को जिसमें अधिनियम के अधीन संवेय कर की समुचित वसूली के लिए या प्रकृ "ग", "क-1" या "क-2" या प्रकृ "ब" की उचित अभिरक्षा और उपयोग के लिए प्रतिभूति देने की अपेक्षा की गई है, निम्न अधीन।

तारीख :

प्रेषित

- (1) रजिस्ट्रीकरण सं० .....
- (2) व्योहारी का नाम .....
- (3) प्रास्थिति .....

(यहां लिखें कि क्या यथास्थिति, हिन्दू अधिभक्त कुटुम्ब, फर्म, लिमिटेड कंपनी; व्यक्ति संगम प्रादि हैं)।

- (4) अधिनाम जिसके अधीन कारबार चलाया जाता है .....
- (5) कारबार मुख्य कार्यालय के स्थान का व्यवस्थापन .....
- (6) पता, जहां साधारणतया सूचना देखी जानी चाहिए .....
- (7) अधिकारी का नाम जिसमें आदेश पारित किया है .....
- (8) पदनाम .....
- (9) उस आदेश की तारीख जिसमें प्रतिभूति दी जाने की अपेक्षा की गई है .....
- (10) ऊपर बंद सं (9) में निर्दिष्ट आदेश की समीक्षा की तारीख .....

- (11) मांग की गई प्रतिभूति की रकम .....
- (12) संवत् की प्रतिभूति की रकम या जिसके लिए नियम 11 में अधिकृत रीतियों में से किसी में प्रत्याभूति दी जाती है .....
- (13) विवादग्रस्त प्रतिभूति की रकम .....
- (14) इस अधील की बाबत संवत् की गई फीस की रकम .....

उस व्योहारी की ओर से जिसकी विशिष्टियां ऊपर वर्णित हैं, श्री ..... के सुपुत्र श्री ..... की धर्मी इस प्रकार से हैं :

- (1) केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 की धारा ..... अधीन धर्मीदार से, अधिनियम के अधीन संवेय कर की समुचित वसूली के लिए/और या प्रकृ "ग"/और या प्रकृ "क-1" और/या प्रकृ "क-2"/और या प्रकृ "ब" की उचित अभिरक्षा और उपयोग के लिए ६० ..... की प्रतिभूति/प्रतिरिक्त प्रतिभूति देने की अपेक्षा की गई है।
- (2) अधिनियम के उपबन्धों के अनुसार उस वर्ष के लिए, जिस की बाबत प्रतिभूति की मांग की गई है, रजिस्ट्रीकृत प्रमाणपत्र के अन्तर्गत माने वाले कारबार स्थान (स्थानों) का धर्मीदार का कुल भावर्तन और कराधेय भावर्तन क्रमशः ..... व और ..... ६० से अधिक नहीं होगा।
- (3) धर्मीदार की, उस वर्ष से, जिसकी बाबत प्रतिभूति की मांग की गई है पहले दो वर्षों का कुल भावर्तन और कराधेय भावर्तन निम्न प्रकार रहा है :

वर्ष के प्रतिनिर्देश	कुल भावर्तन की रकम	कराधेय भावर्तन की रकम	कराधेय भावर्तन पर संवत् कर की रकम
----------------------	--------------------	-----------------------	-----------------------------------

(4) धर्मीदार ने, उस वर्ष के लिए जिसकी बाबत प्रतिभूति की मांग की गई है, निम्नलिखित विक्रय विवरणियां पहले ही प्रस्तुत कर दी हैं :

वैमासिक विवरणी	बर्शाया गया कुल भावर्तन	बर्शाया गया कराधेय भावर्तन	विवरणी के अनुसार संवेय कर	संवत् रकम
----------------	-------------------------	----------------------------	---------------------------	-----------

(5) धर्मीदार को यह प्रार्थना है कि उस वर्ष के जिसकी बाबत प्रतिभूति की मांग की गई है निम्नलिखित विमासों के लिए, विषय की विवरणियां अभी वेय नहीं हुई हैं :

.....	को समाप्त होने वाले विमास
.....	" "
.....	" "

(6) धर्मीदार ने, अपने कुल भावर्तन और कराधेय भावर्तन की विशिष्टियों को नहीं छुपाया है, या जानबूझकर गलत विशिष्टियां नहीं दी हैं, किन्तु ऐसा कि संलग्न अधील के धर्मातों के कथन से देखा जाएगा कि उसने अपने सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार उनकी वास्तविक रकम पर सही विशिष्टियां दी हैं।

(7) धर्मीदार से, उसी प्रतिभूति को नियत करने से पूर्व सुनवाई का अवसर दिए बिना प्रतिभूति देने की अपेक्षा की गई थी। धर्मीदार को यह प्रार्थना है अधिनियम के अधीन उसके द्वारा संवेय कर का अधिक प्राक्कजन किया गया है और इसलिए

अर्जीदार के प्राक्कन के अनुसार, मांग की गई प्रतिभूति उसके द्वारा संदेय कर से ..... रु० अधिक है।

(8) अतः अर्जीदार यह प्रार्थना करता है कि प्रतिभूति की मांग करने वाला आदेश भ्रष्ट किया जाए और मामले को पुनः विचार के लिए प्रतिप्रेषित किया जाए।

(9) अतः, अर्जीदार, प्रार्थना करता है कि उससे प्रतिभूति की मांग करने वाला आदेश वातिल कर दिया जाए/मांग की प्रतिभूति कम की जाए/दी गई प्रतिभूति को निर्मुक्त करने का आदेश दिया जाए/दी गई प्रतिभूति को निर्मुक्त करने से इकार करने वाले आदेश को वातिल किया जाए और इसके परिणामस्वरूप प्रतिभूति को निर्मुक्त करने का आदेश किया जाए क्योंकि अधिनियम के प्रयोजन के लिए वह आवश्यक नहीं है/या यह कि दी गई प्रतिभूति को समपद्धत करने वाले आदेश को वातिल किया जाए।

(10) उस आदेश की, जिसके विरुद्ध अपील की गई है, एक प्रति संलग्न है।

#### अपील के आधार

(यहाँ इस अपील के प्रयोजन के लिए, उन कारणों का जिन पर आप निर्णय करना चाहते हैं, संक्षिप्त कथन लिखें)

मैं, अर्जीदार ..... ऊपर अर्जी में वर्णित अर्जीदार, यह घोषणा करता हूँ कि इसमें जो कुछ कथित है वह मेरी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है और उस आदेश की बाबत जिसके विरुद्ध अपील की गई है, मेरे द्वारा वेय स्वीकार की गई प्रतिभूति निम्नलिखित रीति में दी गई है।

हस्ताक्षर

पदनाम

(अपीलार्थी द्वारा या अपीलार्थी द्वारा इस निमित्त सम्यक रूप से लिखित प्राधिकृत किसी अधिकारी द्वारा हस्ताक्षर किए जाएंगे)।

टिप्पण : जो वाक्यांश या पंरे लागू न हों उन्हें काट दें।

### ADMINISTRATION OF UNION TERRITORY OF DADRA AND NAGAR HAVELI

#### NOTIFICATION

Silvassa, the 23rd December, 1983

No. ADM|LAW|CST|83—In exercise of the powers conferred by sub-sections (3), (4) and (5) of section 13 of the Central Sales Tax Act, 1956 (Central Act 74 of 1956), the Administrator of Dadra and Nagar Haveli hereby makes the following rules, namely:—

#### 1. Short title, extent and commencement.—

- (1) These rules may be called the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983.
- (2) They shall extend to the Union Territory of Dadra and Nagar Haveli.
- (3) They shall come into force with effect from the date of their publication in the gazette.

#### 2. Definitions.—In these rules, unless there is anything repugnant in the subject or context,—

- (a) 'Act' means the Central Sales Tax Act, 1956 (Central Act 74 of 1956);

(b) 'Central Rules' means the Central Sales Tax (Registration and Turnover) Rules, 1957;

(c) 'Commissioner of Sales Tax' means the officer appointed by that designation under section 3 of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Regulation, 1978 (2 of 1978);

(d) 'Form', except Form 1, Form 2, Form 3, Form 4, Form 5, Form 6, Form 7, Form 8, Form 9 and Form 10, which are appended to these rules, means a form appended to the Central Rules;

(e) 'Appropriate Taxation Officer' means—

(i) in relation to any particular dealer, or a person to whom the goods are being transferred, the Sales Tax Officer or Asstt. Sales Tax Officer within whose jurisdiction the place of business of such dealer or transferee of goods is situated;

(ii) in relation to a dealer or a person to whom the goods are being transferred, having more than one place of business in the Union Territory of Dadra and Nagar Haveli, the Sales Tax Officer or the Asstt. Sales Tax Officer within whose jurisdiction the head office of such business is situated;

(iii) in relation to a dealer, or a person to whom the goods are being transferred, and who has no place of business in the Union Territory of Dadra and Nagar Haveli, but sells goods from that Territory or whom the goods are despatched in the said Territory, the Sales Tax Officer specifically nominated by the Commissioner of Sales Tax for non-resident dealers under the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Rules, 1983.

Explanation:—The word 'jurisdiction' occurring in this clause shall have the same meaning as is assigned to the said word in rule 62 of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Rules, 1983.

3. Accounts.—(1) Every dealer registered under the Act shall keep and maintain a true and correct account of his purchases and sales in the course of inter-State trade or commerce showing the following particulars in respect of each transaction, namely:—

- (a) the name and address of the purchaser or the seller, as the case may be;
- (b) the description and quantity or weight of the goods;
- (c) the value of each transaction;
- (d) the amount of Central Sales Tax collected, if any;
- (e) the names of the despatching and the receiving railway or steamer stations, or the air booking offices or sea-ports or officers of the road transport;

- (f) the number of the railway receipt or bill of lading or air consignment note or road transport way bill, invoice number with date or sales bill number with date; and
- (g) serial number of the prescribed declaration form/certificate concerning the purchase or sale, as the case may be;
- (h) any other information which has a bearing on the liability of the transaction to tax under the Act.

(2) Accounts as referred to in sub-rule (1) shall be maintained, as far as they are applicable, by every person in respect of any goods the movement of which from one State to another is claimed to be occasioned by reason of transfer of such goods by him to any other place of his business or to his agent, or principal, as the case may be, and not by reason of sale. Similar account shall be maintained by him in respect of goods received on transfer.

**Explanation.**—For the purposes of this sub-rule, the reference contained in sub-rule (1) to the name and address of the purchaser or of the seller shall be construed as reference to the name and address of the consignor or consignee, as the case may be.

(3) If the Appropriate Taxation Officer considers that the accounts maintained are not sufficiently clear and intelligible to enable him to make a proper check of the returns filed by the dealer, or of the goods received or despatched by a person, he may require such dealer or person, as the case may be, by a notice in writing, to keep such accounts or registers in accordance with the provisions of sub-rule (1) so as to be sufficiently clear and intelligible.

**4. Returns.**—Every dealer registered under the Act shall submit returns of sales made in the course of inter-state trade or commerce in Form 1 so far as may be, in the manner in which returns of sales are furnished by a registered dealer under the provisions of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Regulation, 1978, and the rules made thereunder.

**5. Authority from whom declarations in Form 'C' may be obtained, the use, custody and maintenance of records of such declarations etc.**—(1) A declaration referred to in clause (a) of sub-section (4) of section 8 of the Act shall not be given or accepted by a dealer except in Form 'C', referred to in sub-rule (1) of rule 12 of Central Rules, which is not declared obsolete and invalid. Such declarations in Form 'C' shall be obtained by the dealer from the Appropriate Taxation Officer on application.

(2) The Appropriate Taxation Officer shall grant to the dealer applying under sub-rule (1) such number of blank forms as appears to him to be reasonable:

Provided that a fee of rupees twelve and paise fifty shall be payable for each book of 25 Forms and such fee shall be paid in court-fee stamp or stamps to be affixed to the receipt to be given by the dealer in token of having received the forms granted by the Appropriate Taxation Officer.

(3) Before a purchasing dealer furnishes a declaration in form 'C' to a selling dealer, he shall fill in all required particulars in declaration Form and shall also affix his signature in the space provided in the said declaration for this purpose. Thereafter, the purchasing dealer shall make over the two portions thereof marked 'Original' and 'Duplicate' to the selling dealer and retain the counterfoil which should be maintained for a period of five years or such further period as may, for sufficient cause, be specified by the Commissioner of Sales Tax.

(4) A registered dealer who claims the concessional rate of tax in respect of sales made to another registered dealer shall, in respect of such claims, attach to his return in Form-1 the list of such sales giving their particulars namely, the serial number and date of the bill/cash-memo, the name and address of the purchaser, amount of Sale-price, amount of central sales tax collected, if any, and reference to the serial number of the declaration in form 'C', obtained, if any, from the purchaser, in respect of sales made to him by the time the return is furnished.

(5) For the purposes of sub-sections (1) and (4) of section 8 of the Act, the selling dealer, to whom the two portions of the declaration in form 'C' are made over by the purchasing dealer under sub-rule (3), shall furnish the portion marked 'original' of the said declaration to the Appropriate Taxation Officer upto the time of assessment by such officer. The same officer may, at his discretion, also direct the selling dealer to produce for inspection the portion of the declaration in form 'C' marked 'Duplicate'.

(6) No dealer, to whom a declaration in Form 'C' is issued by the Appropriate Taxation Officer, shall transfer the same to another person, except for the purpose of sub-section (4) of section 8 of the Act.

(7) Every declaration in Form 'C' obtained from the Appropriate Taxation Officer by a registered dealer shall be kept by him in his safe custody and he shall be personally responsible for the loss, destruction or theft of any such Form, or the loss of Government revenue, if any, resulting directly or indirectly from such loss, destruction or theft.

(8) Every registered dealer to whom any declaration in Form 'C' is issued by the Appropriate Taxation Officer shall maintain, in a register in Form 2, a true and complete account of every such Form received from the said Officer. If any such Form is lost, destroyed, or stolen, the dealer shall report the fact to the said Officer, immediately, make appropriate entries in the remarks column of the register in Form 2 and take such other steps to issue public notice of the loss, destruction or theft, as the said Officer may direct. The said register in Form 2 shall be produced for verification as and when required by the Appropriate Taxation Officer.

(9) Any unused declarations in Form 'C' remaining in stock with a registered dealer on the cancellation of his registration certificate shall be surrendered to the Appropriate Taxation Officer, within seven days of the date of communication to him of the order of cancellation, if such declarations had not been surrendered earlier along with the application for cancellation of registration. Such declarations on their receipt

shall be marked 'cancelled' after the issue of the order of cancellation of registration.

(10) A declaration in Form 'C' in respect of which a report has been received by the Appropriate Taxation Officer under sub-rule (8) shall not be valid for the purpose of sub-rule (4).

(11) The Commissioner of Sales Tax shall, from time to time, publish in the Official Gazette the particulars of the declaration in Form 'C' in respect of which a report is received under sub-rule (8).

(12) The Commissioner of Sales Tax may, by notification, declare that declarations in Form 'C' of a particular series, design or colour shall be deemed as obsolete and invalid, with effect from such date as may be specified in the notification issued and published in the Official Gazette.

(13) When a notification declaring declarations in Form 'C' of a particular series, design or colour, obsolete and invalid, is published under sub-rule (12), all registered dealers shall forthwith surrender, within thirty days from the date of publication of the notification, to the Appropriate Taxation Officer all unused declarations in Form 'C' of that series, design or colour which may be in their possession, and obtain in exchange such new declarations in Form 'C' as may be substituted for the declarations declared obsolete and invalid:

Provided that new declarations in Form 'C' shall not be issued to the registered dealer until he has rendered account of the old declarations in such Form lying with him and returned the balance, if any, to the Appropriate Taxation Officer.

6. Use, custody, maintenance, etc. of records of certificates in Form 'D'.—(1) A dealer who wishes to pay tax at a concessional rate under clause (a) of sub-section (1) of section 8 of the Act, in respect of his sales to the Government not being a registered dealer, shall not accept a certificate referred to in clause (b) of sub-section (4) of section 8, except in Form 'D' referred to in sub-rule (1) of rule 12 of Central Rules.

(2) Before the purchasing Government furnishes a certificate in Form 'D' to a selling dealer under sub-rule (1), all the particulars in that certificate shall be filled in, sealed and signed by the officer duly authorised by the Government in this behalf under clause (b) of sub-section (4) of section 8 of the Act, and the two portions thereof marked 'Original' and 'Duplicate' shall be made over to the selling dealer and the counterfoil shall be retained by such officer and maintained for a period of five years or such further period as may, for sufficient cause, be specified by the Commissioner of Sales Tax.

(3) A registered dealer who claims the concessional rate of tax, in respect of sales made to the Government not being a registered dealer, shall, in respect of such claims, attach to his return in Form-1 the list of such sales giving the particulars as referred to in sub-rule (4) of rule 5, as far as they are applicable, and the reference made therein to the declaration in Form 'C' shall be construed for the purpose of this sub-rule as a reference to certificate in Form 'D'.

(4) For the purpose of sub-sections (1) and (4) of section 8 of the Act, the selling dealer, to whom the two portions of the certificate in Form 'D' are made over by the authorised officer of the Government under sub-rule (2), shall furnish to the Appropriate Taxation Officer upto the time of assessment the portion of the certificate marked 'Original'. The Appropriate Taxation Officer may, however, at his discretion, require the selling dealer to produce for inspection the portion of the certificate marked 'Duplicate'.

7. Authority from whom certificates in Form EI or in Form EII may be obtained, the use, custody and maintenance of records of such certificates, etc.—(1) The certificate referred to in clause (a) of the first proviso to sub-section (2) of section 6 of the Act shall not be issued or accepted except in Form EI or EII, referred to in sub-rule (4) of rule 12 of the Central Rules, which is not declared obsolete and invalid. Such Forms shall be obtained from the Appropriate Taxation Officer on application.

(2) The Appropriate Taxation Officer shall grant to the dealer applying under sub-rule (1) such number of blank Forms as appears to him to be reasonable:

Provided that a fee of rupees twelve and paise fifty shall be payable for each book of 25 Forms and such fee shall be paid in court-fee stamp or stamps to be affixed to the receipt to be given by the dealer in token of having received the Forms granted by the Appropriate Taxation Officer.

(3) Before a selling dealer furnishes a certificate in Form EI or EII, as the case may be, to the purchasing dealer, he shall fill in all required particulars in that certificate and shall also affix his signature in the space provided in the said certificate for this purpose. Thereafter, the selling dealer shall make over the two portions thereof marked 'Original' and 'Duplicate' to the purchasing dealer and retain the counterfoil—which should be maintained for a period of five years or such further period as may, for sufficient cause, be specified by the Commissioner of Sales Tax:

Provided that no single certificate shall cover more than one transaction of sale, except in cases where the total amount covered by one certificate does not exceed Rs. 10,000.

(4) Form 'EI' shall be used in respect of the sale for which the exemption is claimed where such sale follows immediately the first sale, and Form 'EII' shall be used in respect of all other subsequent sales.

(5) A registered dealer who claims exemption of tax in respect of a subsequent sale made by him to another registered dealer, or to the Government not being a registered dealer, under sub-section (2) of section 6 of the Act, shall, in respect of such claims, attach to his return in Form 1 the list of such sales giving their particulars, namely, the serial number and date of the bill, cash-memo, the name of the dealer or Government to whom the goods are sold, the amount of sale-price, the name and address of the dealer from whom the goods were purchased by him, and reference to the serial number of declaration in

Form 'C', certificate in Form 'D', certificate in Form EI or EII, as the case may be, if such Forms are obtained by him by the time of furnishing the return.

(6) For the purpose of sub-section (2) of section 6 of the Act, the purchasing dealer making the subsequent sale and to whom the portions of certificate in Form EI or EII, as the case may be, are made over by the first selling dealer under sub-rule (3), shall furnish, in respect of subsequent sales made by him, the portion marked 'Original' of the certificate to the Appropriate Taxation Officer upto the time of his assessment by the same Officer. In similar manner and along with certificates in Form EI/EII he shall furnish to the same Appropriate Taxation Officer the portion marked 'Original' of corresponding declaration in Form 'C'. The Appropriate Taxation Officer may, at his discretion, also direct the selling dealer, claiming the exemption of tax in respect of subsequent sales, to produce for his inspection the portion of the certificate in Form EI/EII, as the case may be, and declaration in Form 'C' or certificate in Form 'D', as the case may be, which are marked 'Duplicate'.

(7) No dealer to whom a certificate in Form EI or EII is issued by the Appropriate Taxation Officer shall transfer the same to another person except for the purpose of sub-section (2) of section 6 of the Act.

(8) Every registered dealer to whom any certificate in Form EI or EII is issued by the Appropriate Taxation Officer shall maintain in a register in Form 3 a true and complete account of every such Form received from the said Officer. If any such Form is lost or destroyed or stolen, the dealer shall report the fact to the said Officer, immediately, make appropriate entries in the remarks column of the register in Form 3 and take such other steps to issue public notice of the loss, destruction or theft, as the said Officer may direct. The said register in Form 3 shall be produced for verification as and when required by the Appropriate Taxation Officer.

(9) The provisions of sub-rules (7) and (9) to (13) of rule 5 shall apply with such changes as circumstances require in relation to certificates in Form EI or EII as if the reference made therein to declarations in Form 'C' included also a reference to certificates in Form EI or EII.

(10) (a) Where a blank or duly completed certificate in Form EI or EII is lost, whether such loss occurs while it is in the custody of the issuing dealer or in transit to the purchasing dealer, the issuing dealer shall furnish in respect of every such certificate so lost an indemnity bond to the Appropriate Taxation Officer from whom the said certificate was obtained, for such sum as the said Officer may, having regard to the circumstances of the case, fix and shall also issue a duplicate for every such certificate so lost. Such indemnity bond shall be furnished by the dealer making the subsequent sale and claiming the exemption in respect of the same sale to the Appropriate Taxation Officer if a duly completed certificate in the said Form received by him is

lost, whether such loss occurs while it is in his custody or while it is in transit to the Appropriate Taxation Officer.

(b) The dealer who issues any such duplicate certificate to the other dealer after complying with the provisions of clause (a) shall give the following declaration, recorded in writing, duly signed by him across the page on each of the three portions of the said duplicate certificate:

"I hereby declare that this is the duplicate of the certificate in Form EI/EII No. .... signed on ..... and issued to ..... who is a registered dealer of ..... (State) and whose Registration Certificate No. is ....."

8. Particulars in respect of certain sales.—A registered dealer, who has made sale in respect of which no concessional rate of tax referred to in sub-section (1) of section 8 of the Act is claimed by him, shall attach to his return in Form 1 the list of such sales giving the particulars as referred to in sub-rule (4) of rule 5, as far as they are applicable.

9. Authority from whom declarations in Form 'F' may be obtained, the use, custody and maintenance of record of such declarations, etc.—(1) A declaration referred to in sub-section (1) of section 6A of the Act shall not be given or accepted by a dealer, or a principal officer of a place of business, or an agent, or a principal, except in Form 'F' referred to in sub-rule (5) of rule 12 of the Central Rules, which is not declared obsolete or invalid. Such declarations in Form 'F' shall be obtained by the person to whom the goods are being transferred from the Appropriate Taxation Officer.

(2) The Appropriate Taxation Officer shall grant to the person applying under sub-rule (1) such number of blank Forms as appears to him to be reasonable:

Provided that a fee of rupees twelve and paise fifty shall be payable for each book of 25 Forms and such fee shall be paid in the court-fee stamp or stamps to be affixed to the receipt to be given by the dealer in token of having received the Forms granted by the Appropriate Taxation Officer.

(3) Before a dealer, or the principal officer of a place of business, or an agent, or principal, as the case may be, furnishes a declaration in Form 'F' to the person effecting the transfer of the goods, he shall fill in all required particulars in that declaration and shall also affix his signature in the space provided in the said declaration for this purpose. Thereafter, he shall make over the two portions thereof marked 'Original' and 'Duplicate' to the person transferring the goods and shall retain the 'counterfoil' which should be maintained for a period of five years or such further period as may, for sufficient cause, be specified by the Commissioner of Sales Tax.

(4) A person who has obtained declarations in Form 'F' from the Appropriate Taxation Officer shall maintain a register in Form 4. The same register shall be produced for verification along with respective accounts maintained in respect of the goods transferred to him, as and when required by the Appropriate Taxation Officer.



(5) The Appropriate Taxation Officer may, in his discretion, require any dealer, principal officer of a place of business, an agent, or a principal, to whom he believes that the goods are despatched from other States, or who is believed to have despatched the goods to other States, to produce before him for verification the accounts maintained in respect of despatch of such goods, to enable him to satisfy that the despatches of the goods from one State to another, are not by way of inter-state sales, or that the goods received are duly accounted for. For the purpose of requiring the production of the accounts referred to above the Appropriate Taxation Officer shall serve a notice in Form 5 upon the person concerned.

(6) A person who claims that he is not liable to pay tax under the Act in respect of any goods, on the ground that the movement of such goods from one State to another was occasioned by reason of transfer of such goods by him to any other place of his business, or to his agent, or principal, as the case may be, and not by the reason of sale, shall furnish to the Appropriate Taxation Officer the portion marked 'Original' of the declaration in Form 'F' obtained from the transferee, and shall produce all evidence in support of such transfers. The Appropriate Taxation Officer may, however, in his discretion, require the person furnishing the 'Original' of the declaration in Form 'F' to produce for inspection the portion marked 'Duplicate' of the said declaration.

The portion marked 'Original' of the declaration in Form 'F' referred to above shall be furnished to the Appropriate Taxation Officer within the time specified in the notice referred to in sub-rule (5), but such time shall not be less than fifteen days from the date of service of the notice. Such time may, however, be extended by the Appropriate Taxation Officer for good and sufficient reason.

(7) No person to whom a declaration in Form 'F' is issued by the Appropriate Taxation Officer shall transfer the same to another person, except for the purpose of section 6A of the Act.

(8) The provisions of sub-rules (7) and (9) to (13) of rule 5 shall apply with such changes as circumstances require, in relation to declarations in Form 'F', as if the reference made therein to declarations in Form 'C' included also a reference to declarations in Form 'F'.

10. (1) The Appropriate Taxation Officer, when he thinks necessary to make an assessment or reassessment of Central Sales Tax payable by a dealer under the Act, may serve a notice in Form 6 or Form 7, as the case may be, upon the dealer, and in respect of any such assessment or reassessment the relevant provisions of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax regulation, 1978, and the rules made thereunder, shall so far as may be, apply.

(2) The assessment order or reassessment order shall be passed in Form 8.

(3) If any additional amount is payable, as a result of assessment or reassessment made, the dealer shall be served with a notice in Form 9 and in respect of payment demanded, the procedure laid down in the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Rules, 1983, so far as may be, shall be followed.

11. Furnishing of security for proper realisation of tax payable under the Act, or for the proper custody and use of the Forms EI or EII, Forms 'F' and Forms 'C'.—Where a security is demanded from a person under the provisions of sub-section (2A) or sub-section (3A) of section 7 of the Act, such security may be given in any of the following manners, namely:—

- (a) in the form of deposit in the Post Office Saving Bank Account pledged to the President of India through the Appropriate Taxation Officer;
- (b) in the form of a Bank guarantee of any Nationalised Bank given to the President of India through the Appropriate Taxation Officer. Such guarantee may also be given by any other Bank if its acceptance is proposed by the Appropriate Taxation Officer, after satisfying himself about the solvency of the Bank;
- (c) in the form of National Savings Certificates pledged to the President of India through the Appropriate Taxation Officer;
- (d) in the form of a surety Bond given to the President of India through the Appropriate Taxation Officer, with at least one surety acceptable to the Central Government.

12. Where a security from a person is demanded under the provisions of sub-section (3C) of section 7 of the Act, such security shall be furnished by such person in the same manner as is provided in rule 11.

13. Where the security from a person is demanded under the provisions of sub-section (3E) of section 7 of the Act, such security shall be given in the same manner as is provided in rule 11 and within a period of 60 days from the date of the order.

14. Procedure to be followed in an appeal filed under sub-section (3H) of section 7 of the Act.—(1) The appeal referred to in sub-section (3H) of section 7 of the Act, shall lie to the authority prescribed in rule 35 of Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Rules, 1983, for hearing the appeals filed under sub-section (1) of section 31 of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Regulation, 1978. The said authority shall, hereafter, be referred to as Appellate Authority.

(2) The memorandum of appeal shall be presented in duplicate in Form 10 to the Appellate Authority, by the appellant, or his agent, or it may be sent to the Appellate Authority by registered post, and shall be signed either by the appellant himself or by a person duly authorised by him in writing in this behalf.

(3) A fee of rupees ten shall be payable in respect of the memorandum of appeal and the same shall be paid in court-fee stamps affixed to the said memorandum. The memorandum of appeal shall be accompanied by a certified copy of the order appealed against, and it shall also be endorsed by the appellant or his agent as follows :

- (a) that the amount of security demanded of him by the Appropriate Taxation Officer has been paid:

Provided that the said endorsement will not be necessary where Appellate Authority for sufficient cause had permitted the aggrieved person to present the appeal without furnishing the whole of the security or any part of the security;

(b) that to the best of his knowledge and belief the facts set out in the memorandum of appeal are true.

(4) The appeal may be summarily rejected if the appellant, after being given a reasonable opportunity in this behalf, fails to comply with any of the requirements of sub-rules (2) and (3).

(5) If the Appellate Authority does not reject his appeal summarily, it shall fix a date for hearing and shall notify the same to the appellant and to the Appropriate Taxation Officer.

(6) If the Appellate Authority so desires it may depute an Officer or Inspector to hear and record the evidence produced by or on behalf of the appellant or to make such inquiries as it may direct. The Officer or Inspector so deputed will have the authority to conduct such inquiries on the spot as it may be considered necessary for the case.

(7) The Appellate Authority, in disposing of any appeal filed under sub-section (3H) of section 7 of the Act, may—

(a) confirm, reduce, enhance or annul the amount of security demanded by the Appropriate Taxation Officer; or

(b) set aside the order of the Appropriate Taxation Officer and direct the said Officer to make a fresh order after such further inquiries as may be directed; or

(c) pass such other orders as it may think fit.

15. Application of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Regulation, 1978, and the rules made thereunder.—The provisions of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Regulation, 1978, and the rules made thereunder (including the use of forms) shall apply mutatis mutandis to all proceedings or other matters incidental to the carrying out of the purposes of the Act, and for which no provision is made in these rules or in the Central Rules.

16. Penalty.—If any person commits a breach of any of these rules he shall be punishable with fine which may extend to five hundred rupees, and when the offence is a continuing offence with a daily fine which may extend to fifty rupees for every day during which the offence continues.

By order and in the name of the Administrator  
of Dadra and Nagar Haveli

S. S. KOLVEKAR, Secy. to the Administrator  
Silvassa,

#### FORM 1

Form of return under rule 4 of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983

Return for the period from.....to.....  
Registration Certificate No.....:

Name of the dealer.....  
Address of the dealer.....  
Status of the dealer.....  
(Whether individual, partnership, company, Hindu undivided family, association, club, guardian or trustee).

Title under which the business is carried on.....

1. Gross amount received and receivable by the dealer during the period in respect of sale of goods .....  
Deduct
  - (i) Sale of goods outside the State (as defined in Section 4 of the Act) .....
  - (ii) Sale of goods in the course of export outside or import into India (as defined in Section 5 of the Act) .....
2. Balance—turnover of inter-state sales and sales within the State .....  
Deduct—Turnover of sales within the State .....
3. Balance—Turnover of inter-state sales .....  
Deduct—
  - (i) Cost of freight or delivery or the cost of installation where such cost is separately charged on inter-state sales .....
  - (ii) Sums allowed as cash discount if the turnover is considered inclusive of the same sums .....
  - (iii) Sales prices of goods returned by the purchaser within the prescribed period .....
4. Balance—Total turnover of inter-state sales .....  
Deduct—
  - (i) Subsequent sales not taxable under Section 6(2) of the Act .....
  - (ii) Sales not taxable under Section 8(2A) of the Act .....
5. Balance—Total taxable turnover of inter-state sales .....
6. Goodwise break-up of the above taxable turnover and the tax payable thereon.

	Amount of taxable sales Rs. (1)	Amount of tax payable Rs. (2)
--	---	---

- |  |       |       |
|--|-------|-------|
| (i) Sales of declared goods taxable at the rate of 4% .....                  | ..... | ..... |
| (ii) Sales to registered dealers on Form 'C' taxable at the rate of 4% ..... | ..... | ..... |

	(1)	(2)
(iii) Sales to the Government other than registered dealer, on certificate in Form 'D', taxable @ 4%	_____	_____
(iv) Sales to persons other than registered dealers taxable at the rate of _____	_____	_____
(v) Sales of goods notified under sub-section (5) of Section 8 of the Act	_____	_____
(vi) .....	_____	_____
(vii) .....	_____	_____
Total	Rs. _____	Rs. _____

7. Reference to number, date of the chalan and amount paid by the same .....

Note 1—I enclose with this return the lists of inter-state sales with particulars thereof as required by sub-rule (4) of rule 5 and sub-rule (3) of rule 6 of the Rules.

Note 2—I also enclose the list of inter-state sales where no concessional rate of tax is claimed, as required under Rule 8 of the Rules.

Note 3—I also enclose the list of subsequent sales as required by sub-rule (5) of Rule 7 of the Rules with regard to exemption claimed under section 6(2) of the Act.

I declare that the statement made and particulars furnished in and with this return are true and complete.

Place: ..... Signature: .....

Date: ..... Status: .....

Annexures: .....

(total number)

## FORM 2

Register of declarations in Form 'C' maintained under Rule 5(8) of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983

Receipts				Issues									Remarks
Date of receipt of Forms	Authority from whom received	Serial No. of book received	Sl. Nos. of declarations contained in the book from No. .... to No. ....	Date of issue of the Form	Reference to serial number of the book	Reference to serial number of the form issued	Name and address of the selling dealer to whom issued	No. and date of order in respect of which issued	Seller's cash memo/challan No. in reference to which the form is issued	Value of the goods	No. and date of rail-way receipt of other carrier's challan for the goods	Reference to Forms surrendered if any to the Sales Tax Authority	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14

## FORM 3

Register of Certificates in Form EI/EII maintained under rule 7(8) of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983

Receipts					Issues										Remarks
Date of receipt	Authority from whom received	Serial No. of book received	Sl. Nos. of Forms contained in the book from No. .... to No. ....	Date of issue of the Form	Reference to serial number of the book	Reference to serial number of the form issued	Name and address of the purchasing dealer to whom issued	No. and date of purchaser's order in respect of which issued	No. and date of corresponding form 'C' received from the purchaser	Description of goods in respect of which issued	Value of the goods	Cash memo/challan No. in reference to which issued	No. and date of rail-way receipt or other carrier's challan for goods	Reference to forms surrendered if any to the Sales Tax Authorities	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16

[सं. ११-२०३६ ३]

**भारत का राजपक्ष : प्रसाधारण**

21

## FORM 5

Notice under rule 9(5) of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983

To,

.....(Name of the person)  
.....(Address)

Whereas

\*(1) It has come to my notice that some goods have been despatched by you to other State(s) in respect of which I wish to satisfy myself whether such despatch (es) is/are of the nature of inter-state sales or otherwise;

\*(2) It has come to my notice that some goods have been despatched to you for business purposes and I wish to satisfy myself that such goods despatched to you are duly accounted for; And, therefore, under the provision of sub-rule (5) of Rule 9 of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983, you are hereby directed to attend in person or through an agent authorised in writing at (place) .... at (time) .... on (date) ..... and to produce before me for verification the accounts and documents maintained in respect of all such goods despatched by you and/or despatched to you during the period from.....to.....

You are also directed to produce along with the accounts and documents relating to despatches referred to above, the following books and documents maintained by you:

Please note that if you do not comply with the requirements of this notice you shall render yourself liable for action under rule 16 of the Rules referred to above.

SEAL

Place..... Signature .....

Date:.....

.....  
Appropriate Taxation Officer  
Name of the Office

\*Strike out whichever is not applicable.

## FORM 6

[See rule 10(1) of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983]

Notice for assessment under Section 9 of the Central Sales Tax Act, 1956, read with Section 20 of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Regulation, 1978.

To,

.....(dealer)  
.....(address)

Central Sales Tax Registration No. if any.....  
Whereas

\*(a) I am not satisfied without production of evidence before me that a return furnished by you in respect of the period from.....to.....is correct and complete.

\*(b) You being a dealer registered under Certificate No. .... have not furnished by the prescribed dates the return of sales in respect of the period .....to.....

\*(c) I am satisfied on information which has come to my possession that you have been liable to pay tax under the Central Sales Tax Act, 1956, in respect of the period commencing on.....and ending with .....but that you have failed to get yourself registered

And whereas, it appears to me to be necessary to make an assessment of tax under the Central Sales Tax Act, 1956, read with section 20 of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Regulation, 1978, in respect of the above mentioned period(s).

You are hereby directed to attend in person or by an agent duly authorised in writing at (place) ..... on (date) ..... at (time) ..... and there to produce or cause to be produced at the said time and place the accounts and documents, specified below for the purpose of such assessment, together with any objection which you may wish to prefer and any evidence that you wish to adduce in support thereof:

And also to furnish the following information:

And to show cause on that date and the time why in addition to tax to be assessed on you for the period, a penalty under the Central Sales Tax Act, 1956, should not be imposed upon you.

In the event of your failure to comply with the notice, I shall assess you to tax and impose penalty under the Central Sales Tax Act, 1956, read with Section 20 of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Regulation, 1978, to the best of my judgement without further reference to you.

(Seal)

Place.....

Signature

Dated:.....

(Appropriate Taxation Officer  
—Assessing Authority)  
(Name and designation of the officer)  
Sales Tax Office .....

\*Strike out words, phrases or paragraphs not applicable.

## FORM 7

[See Rule 10(1) of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983]

Notice for re-assessment under Section 9 of the Central Sales Tax Act, 1956, read with Section 21 of the Dadra and Nagar Haveli Sales Tax Regulation, 1978.

To,

.....(dealer)  
.....(address)  
Central Sales Tax Registration No. if any.....

Whereas in consequence of definite information in my possession, I have reasons to believe that the turnover of your business assessable to Central sales tax for the period from .... to.....has been under assessed/  
escaped assessment

I hereby require you to show cause within .....days of the service of this notice on you why the contemplated action should not be taken in your case.

(Seal).

Place:.....

Signature .....

Date:.....

(Appropriate Taxation Officer  
.....Assessing Authority)  
.....

(Name and designation of the officer)  
Sales Tax Office.....

## FORM 8

[See Rule 10(1) of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983]

\*Order of assessment/re-assessment of tax under the Central Sales Tax Act, 1956

1. Registration Certificate No. ....
2. Year of assessment .....  
Period of assessment from .....  
.....to.....
3. Name of the dealer:
4. Address of the dealer:
5. Location of places of business:
6. (i) Account books produced:  
(ii) Method of accounting:
7. Date of service of notice:

As in dealer's returns	As determined by the Assessing Authority

8. Net total turnover of inter-state sales:
9. Deductions:
  - (i) Turnover of inter-state sales of goods exempt from tax generally, under the local sales tax law vide Section 8(2A) of the Act.
  - (ii) Subsequent sales not taxable under Section 6(2) of the Act.
10. Net taxable turnover of inter-state sales.
11. Goodwise break-up of the above
  - A. Declared goods
  - B. Other goods
    - (i) sold to registered dealers or Government under Section 8(1) of the Act.
    - (ii) sold otherwise i.e. under Section 8(2) of the Act.
    - (iii) ....

Total

12. (i) Taxable at .....% Rs.  
.....on which tax amounts to Rs. ....
- (ii) Taxable at .....% Rs.  
.....on which tax amounts to Rs. ....
- (iii)
- (iv)
- (v)
- (vi)

13. Total amount of central sales tax payable
14. Penalty determined as payable
15. Total tax and penalty payable
16. Amount already paid
17. Net balance due

18. Net refund due if any.

19. Assessment order/re-assessment order.

(Seal).

Place: .....

Date: .....

Signature .....

(Appropriate Taxation Officer  
—Assessing Authority)

(Name and designation of the officer)  
Sales Tax Office

\*Strike out whichever is not applicable.

## FORM 9

[See rule 10(3) of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983]

Final notice of demand after assessment/re-assessment under the Central Sales Tax Act, 1956

Sales Tax Office,

Dated: .....

No. ....

To,

.....  
.....  
of .....

You are hereby informed that for the period from ..... to ..... you have been assessed/re-assessed to Central sales tax, penalty etc., as under:—

Amount of Central sales tax payable on *assessment/re-assessment	Rs. ....
Penalty imposed	Rs. ....
Total amount payable	Rs. ....
Less amount already paid	Rs. ....
Net balance due	Rs. ....

You are hereby directed to pay the sum of Rs. .... (in figures) Rupees ..... (in words) into the Government Treasury at ..... (place) within 60 days from the date of receipt of this notice and furnish the receipted chalan in proof of payment to this office within a week thereafter failing which the said sum will be recoverable from you as arrears of land revenue.

The chalan is enclosed for the payment.

(Seal)

Place: .....

Signature .....

Appropriate Taxation officer  
—Assessing Authority.

(Name and designation of the Officer)

\*Strike out whichever is not applicable.

## FORM 10

[See Rule 14(2) of the Central Sales Tax (Dadra and Nagar Haveli) Rules, 1983]

Appeal against an order requiring security to be furnished for proper realization of tax payable under the Act or for the proper custody and use of the Forms 'C', 'EI' or 'EII' of Form 'F'

Dated the .....

To,

The.....  
.....

(i) Registration No.....

(ii) Name of the dealer.....

(iii) Status.....

(Write here whether Individual, Hindu Undivided Family, Firm, Limited Company, Association of persons etc. as the case may be).

(iv) Style under which the business is carried on.....

(v) Location of place of business/head office.....

(vi) Address to which communication should ordinarily be despatched.....

(vii) Name of the officer who passed the order.....

(viii) Designation.....

(ix) Date of the order requiring to furnish the security.....

(x) Date of the service of the order referred to above in clause No. (ix).....

(xi) Amount of security demanded .....

(xii) Amount of security paid or for which guarantee is given in any of the manners laid down in rule 11.....

(xiii) Amount of security in dispute .....

(xiv) Amount of fee paid in respect of this appeal .....

The petition of .....s/o .....on behalf of the dealer whose particulars have been mentioned above, sheweth as follows:—

(1) Under Section .....of the Central Sales Tax Act, 1956, your petitioner has been required to furnish a security/ additional security of Rs.....as for the proper realization of the tax payable under the Act/and or for the proper custody and use of the Forms 'C'/and or Form EI or EII/and or Form 'F'.

(2) Your petitioner's gross turnover and taxable turnover according to the provisions of the Act, of the business place(s) covered by his Registration Certificate for the year in respect of which security is demanded shall not be more than of Rs.....and of Rs.....respectively.

(3) Your petitioner's gross turnover and taxable turnover for the two years preceding the year in respect of which security is demanded has been as follows:

Reference to the year	Amount of gross turnover	Amount of taxable turnover	Amount of tax paid on the taxable turnover
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

(4) Your petitioner has already submitted, for the year in respect of which security is demanded, the following returns of sales:

Return for the quarter	Gross turnover shown	Taxable turnover shown	Tax payable as per return	Tax paid
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....

(5) Your petitioner has to submit that returns of sale have not yet become due for the following quarters of the year in respect of which security is demanded:

for the quarter ending	.....
-do-	.....
-do-	.....
-do-	.....

(6) Your petitioner did not conceal the particulars of his gross turnover and taxable turnover or deliberately furnished inaccurate particulars thereof; but as will be seen from the statement of grounds of appeal attached has given the same particulars at their real amount to the best of his knowledge and belief.

(7) Your petitioner was required to furnish the security without being given an opportunity of being heard before fixing the same security. It is the submission of your petitioner that there has been an over-estimate of the tax payable by him under the Act and therefore the security demanded is exceeding the tax payable by him by Rs.....as per estimates of the petitioner.

(8) Your petitioner therefore prays that the order demanding security be set aside and the case remanded back for fresh consideration.

(9) Your petitioner, therefore, prays that the order demanding security from him be annulled/that the security demanded be reduced/that the security furnished be ordered to be released/ the order of refusal to release the security furnished be annulled and in consequence thereof the security ordered to be released as not being necessary for the purpose of the Act/or that the order forfeiting the security furnished be annulled.

(10) A certified copy of the order appealed against is attached.

#### GROUND OFS OF APPEAL

(Enter here a concise statement of the reasons on which you rely for the purpose of this appeal).

I,.....the petitioner named in the above petition, do hereby declare that what is stated herein is true to the best of my information and belief and that the security admitted by me to be due in respect of the order appealed against has been furnished in the following manner.....

Signature.....

Designation.....

(To be signed by the appellant or by an agent duly authorised in writing in this behalf by the appellant)

Note : Strike out phrases or paragraphs not applicable.